न, हार मुखहारहैं निहारे टूटेहारहैं॥ फबरही कलित कपोलन में पीक लीकैं, वलत नख क्षत उरोजन अगारहैं। मुररही बेसर सिकुररही सारी अंग, फुररहे आलस बिथुर रहे बारहैं॥

इसी प्रकार राजपुत्र प्रातकाल प्रातःक्रिया करता, फिर दिव्य वस्त्राभूषण धारणंकर राजसभामें प्राप्तहोता, महाराजको प्रणामकर सविवेक राज्य कार्य करता, सब के हृदय कमल अपने सुरस संभाषणसे प्रफुल्लित करता, संध्या समय पलट आता, रात्रि सुखसे बिताता, परम प्रेमथा, नित्यका यह नेमथा, एक दिवस रात्रि के समय बुद्धिवतीका स्मरण आया, नेत्रों में जल भर लाया, गद गद कण्ठ हुआ, शिथिल सब अंग हुआ, राजपुत्री इस दशाको अवलोकन करतेही शीघ्रही सहमगई. ईश्वरेच्छामें भरमगई, दुःखसे छड़कीथी, आपत्तिसे भड़की थी, सविनय निवेदन करने लगी कि आपके चित्तोद्विग्नताका क्या कारणहै ? शीघ्रही प्रकाशितकर दासी का शोक निवारण कीजिये, आप अपने चित्तको प्रसन्न कीजिये, तब राजपुत्र ने शीतल श्वासले कहा प्राणप्यारी ! आपके निमित्य मैंने अपने राज्यका त्याग किया, माता पिताका परित्याग किया, अपने जीवको क्लेशदिया बन २ का वास लिया तब यह आपका समागम प्राप्त हुआ, परन्तु इसके अन्तरंग यह वार्त्ता है कि मार्ग में एक उत्तम स्थान है विद्यानगर उसका नामहै वहां का राजा चित्रसेन राजको तज राजऋषि होगया अपनी बुद्धिवती बेटी को राज्याधिकार दे दिया, और यह भी शिक्षा देतीथी कि तुम सविवेक उत्तम राजपुत्रसे अपना

विवाह करलेना अकस्मात् एक दिवस में उसकी सीमा पर प्राप्त हुआ उसी समय राजपुत्रीभी अपनी दासियों सहित आखेट करतीहुई पहुंची, और मुझको देखआ-शक्त होगई, फिर निज मंदिरको लेगई, और मुझअ-तीतसे इतना प्रेम बढ़ायां कि हमको उसके वचन स्वी-कृत करनापड़े, जब मैंने आपके स्नेहकी सविधि कथा वर्णनकी तो उसने भी सहर्ष कहा कि मैं धर्मपत्नीहूं मुझे आपके चित्तकी प्रसन्नता रखना अवश्यहै इस हेतु र-तिप्रभा तो हमसे श्रेष्ठ और राजकन्या है उसके साथ का वास अनुचित नहीं है यदि आप उनकी दासियोंका दासत्व मुझे अर्पण करें तो आपकी आज्ञानुसार स-प्रेम स्वीकृत है, आप चित्तोत्साह से यथेष्ट गमनकर स्वकार्य साधन करें, परंतु मेरा स्मरण मात्र बनारहे इसीप्रकार उसके पिता ने भी मुझसे पुनरागमन का वचन लेलिया है, अब जैसी आपकी सम्मतिहो--तब रतिप्रभाने भी अत्यानंदसे निवेदन किया कि मेरा भी अंतःकरण आपके माता पिताके दर्शनोंको अत्यंत उ-त्सुकहै, अब आप शीघ्रही इस समाचारको हमारे पिता से प्रकाश कीजिये, और बिदा लीजिये, फिर बुद्धिवती सहित स्वस्थान को प्राप्त हूजिये, फिर परस्पर प्रेम से सोने लगे, रात्रिको बिताने लगे ॥

अष्टम कथा ॥

चंद्रकांतिका रतिप्रभा सहित बिदाहोना. बुद्धिवती के समीप प्राप्तहोना, फिर वहां कुछ दिन वास करना, आनंदसे हृदय भरना ॥

दोहा । विपत घरी चहुंयुग सरिस, सुख युग लगत क्षणएक ।
यह अद्भुत संसार गति, प्रेम निवाहन टेक ॥

श्रवण करनेकी वार्त्ता हैं कि महाराज और महारानी कन्या और जामातृको नित्य लालन करते, अवलोकन कर आनंदसे हृदय भरते,उत्तम सत्कर्म करते दोनोंपर अपने प्राण न्योछावर करते, एकदिवस नित्य निवाह पूर्वक जब राजपुत्र राजसभामें प्राप्तहो निवेदन करने लगा कि यद्यपि मैं विदेशी हूं और आपकी सेवा भी यथोचित मुझसे नहीं हुई, तथापि आपने अपनी उदारतासे, समस्त प्रकारसे मुझे अंगीकार कर सभा में प्रतिष्ठित किया, यह आपकी सत्कीर्ति पृथ्वी पर चिरस्थायी रहेगी, इसहेतु अब मुझे आपके चरणोंका वियोग भाता नहीं है परंतु स्वमाता पिताके दर्शनों विहीन रहा भी जाता नहीं है, उनने भी दासके निमित्त कितने प्रयत्न किये, क्या २ उपाय किये, वह भी अब आपके सादृश्य वृद्धताको प्राप्तहैं, जर २ गात हैं, तिसपर भी मैंने उनका यह अपराध किया, पुत्र वियोग का यश लिया,जैसाही उन्होंने मेरा सप्रीति लालन किया. तैसा ही मैंने यह उनको पूर्ण दुःखदिया. अब आपकी आज्ञा हो तो उनके भी चरणों की रज माथे पर धारण करूं, अपना जन्म सुफल करूं, महाराज इतना श्रवण कर-

तेही शीतल श्वासले कहनेलगे कि ईश्वरने मुझे सब प्रकारसे उत्तम राज दिया, परंतु इस अंधेरे घरका एक दिया न दिया, तथापि मैंने आपके बिधुबदन के अवलोकन करनेसेप्रकाशित जाना था आपको कुलका दीपक मानाथा, यदि आपके चित्त में ऐसीही आई है तो परम उत्तम है, सहर्ष गमनकीजे, अपने माता पिताको सुख दीजे, समय२ पर हमारे भी नेत्रोंको सनाथ करते रहिये, दर्शनोंसे तृप्त करते रहिये, इस राज्यको अपना समझते रहिये हमारा पोषण करते रहिये, अब हमारे कन्याहै न पुत्र है एक आपही दौहित्र हैं, इतना कहते ही प्रेमसे बिह्वलहुये, स्नेहसे शिथिल हुये, अंतःकरण से अधैर्य्य हुये व्याकुलतासे मूर्च्छित हुये; तब चंद्रक्रांति भी इन वचनोंको श्रवण करतेही महाराज के चरणों पर लेटकर अंश्रुओंको बहाकर, धीरज धरानेलगा; विनय करने लगा कि महाराज आप सज्ञान हो, मुझ बालक अज्ञानकी क्या सामर्थ्य जो आपका बोधकरसकूं, परंतु निवेदन यही है कि आपमें और हमारे पिता में क्या भेद है, अभेदहैं दासको उचितहै कि आप दोनों महाराजोंकी एक सदृश सेवाकरे आपकी आज्ञाको निबाहाकरे, जिससे ईश्वर कृपाल रहे, मेरा प्रतिपाल रहे, जब आप इतने अधैर्य्य होते हैं, तो हमारी सुध कौन लेगा, हमको सुख कौनदेगा. हम किसके बलसे बिचरेंगे, मनेप्सित पूरी करेंगे, आप भगवत्का स्मरण करें, दासपर कृपाकरें, तब महाराजने रामका नाम लियां, चित्त को धीरज दिया, मन्त्रीको आज्ञादी, राजपुत्र के बिदा

की तयारी की, इसबात के प्रगट होतेही नगरी का क्या हाल हुआ, आबाल वृद्ध व्याकुल हुआ, परस्पर संबाद हुआ, कहनेलगे कि कौनसा दिवस वह था, जिसदिन यह समागम हुआ, कौनसा दिन आज है जिसमें विछोह के चिह्न उत्पन्न हुये, अपंन बड़े अभागी हैं, जिन को इनदोनों प्रेम मूर्तियों ने त्यागे हैं, महाराजकी क्या दशा होगी, अत्यन्तही बेहाल होगी, जब किंचित् समागम से अपना यह हाल है तब राजपुत्र की पिता की क्या दशा होयगी, जिनको अबतक यह भी सुध न मिली होयगी कि राजकुमार सजीव है कि कालवश हुआ, अब राजपुत्र का चिंतित कार्य पूर्ण हुआ, उचित है कि अपने माता पिता के गृह संतप्त हृदय केदार को शीतल आलिंगन देने से शांति करें, फिर समयान्तर में यहां की भी सुध करें, इसीप्रकार आवागमन किया करें, सब के नेत्र सफल किया करें, जब यह वार्त्ता राजमन्दिर में प्रगट हुई, महारानी शोकाकुलित हुई, रतिप्रभाको कण्ठसे लगाया, उत्तम स्त्रीधर्म सिखाया, शिक्षा दी कि पति के अनुकूल रहना, सास श्वशुर की सेवा करना, उत्तम सत्कर्म करना, धर्म में बुद्धि रखना, इन बातों से ईश्वर कृपा करताहै कुलकी लज्जा रखता है, इसीप्रकार थोड़ेदिवस व्यतीत होनेपर शुभ मुहूर्त आने पर परस्पर मिलापकर उच्चस्वर से विलापकर राजपुत्री को बिदाकी, महाराज जामातृ के पहुंचानेको अपनी सींमा तक गये, फिर सखेद राजमंदिर को पलट गये, चन्द्रकांति रतिप्रभा सहित प्रातःकाल से कूच

करता, उत्तम स्थल देख निवास करता, किंचित् दिवसांत में विद्यानगरके समीप पहुँच एक दूतके द्वारा अपने आगमनके समाचार बुद्धिवतीके समीप भेजे, इहां पर जिस दिवससे चन्द्रकांति बुद्धिवतीसे बिदाहो रतिप्रभा की ओर को गया था बुद्धिवती विरहसागर में निमग्न होगई थी, प्रेमकी लहरों पर लहरें आती थीं, कामाग्नि से जली जाती थी, यह कवित्त जिह्वा पर लाती थी ॥ "यथा"

"कवित्त" छप्पर उसीरके पटीर नीर नीरे कर, शशिमुखी सीरे सीरे करत उपचारहै। पंकजके पातनके ढोरत पवन सखी, ज्यों त्यों व्यथा विरहकी बाढ़त अपार है ॥ भनत कवींद्र या अँदेशेको सँदेशो कोऊ, कहोजाय आली जहां नन्दको कुमार है। अंगनकी झार लागे मेह सूखे अंगनको, देहलागे खेह भयो जात घनसार है ॥

कभी पुनर्दर्शनों की आशा वश किनारे आजातीथी अपना शृङ्गार बनातीथी ॥

"कवित्त" वासक की रजनी में सजनी उछाह भरी, बाहर बहार आई आगेही डगरके। गरक गुलाबनीर अरक उसीरसीरे, चौक छिरकाये चारु बगर बगरके ॥ भनत 'कवींद्र' प्यारी सकल शृँगार साज, प्यारे को विलोके मग जगर मगरके। बार राखे दीपक सवाँर राखे सेज सांज, गारराखे अरगजे चन्दन अगरके ॥

इतने पर जब प्राणप्यारे की अवधि बीतजाती थी तब सखियों से यह सम्बाद लातीथी ॥ "यथा"

"कवित्त" करों अलिकामें पलिका में न परै चैन, मैन बंधे शरन सों हरन विरामरी। भनत कवीन्द्र रजनी में ठये सजनीरी, ग्रीषम विरहको दुसह दुःख धामरी ॥ पांवड़े चखौं के कर लखौं में ललाको मग, सखा बिरमाये कि लुभाये काहू बामरी।

औधि बदि श्यामरी बिताये युग यामरी, बसेधौं काके धामरी न आये घनश्यामरी ॥

कभी उसउपवनमें उसवृक्षकेसमीप जातीथी, जिसके नीचे प्रथम राजकुमारका समागमहुआथा ॥ "यथा"

"कवित्त" घूम घटा नभ छाई भूमछुवै अकाशछाई, चमकत कौंधा चकचौंधा सो वगारेतें । चटकारी चूनरी कुसुम्भी वा किनारी, तैसी ये दमकरही घूँघट उघारेतें ॥ भनत 'कवींद्र' अंग अंगन गुराई तैसी, सबीकी सुहाई फबी पग मग धारेतें । ह्वैसमें सिधारी गिरिधारी के मिलन हेत, जानी जात दामिनी न कामिनी निहारेतें ॥

जब नेत्रोंको मूँदे पतिके ध्यानमें वृक्षके नीचे जाती आंखें खोल उत्तम प्रकार से अवलोकन करती, जब मनभावन को नहीं पाती, तब अपनी यह दशा बनाती ॥ "यथा"

"कवित्त" संग सजनीके सजनी के साज मिलबे को, कंज मुखी मंजु कुंज मंदिर को आई है । भनत 'कवीन्द्र' लतिकान को चितैके तहां, सूनीसेज देखे व्यथा दूनी सरसाई है॥ टोरडारी फूलमाल बेली भई व्याली हाल, बाढ़ी बिरहानल की ज्वालन जराई है । निरखो न पीरी पर आई मुख पीरी पीर, मदन की पीरी ह्वैके मरण सिधाई है ॥

फिर तो अचेतहो भूमि पर पतित हुई, यह दशा अवलोकनकर दासी अति व्याकुल हुई देवोंको मनाने लगीं सुन्दर उपचार करनेलगीं राजकुमारी यह क्या आप करतीहो ? वृथा क्यों मरतीहो ? धीरज क्यों नहीं धरती हो ? फिर राजमंदिर को लिवागईं, पुष्पोंकी सेजपर सुला दिया, चंदन का लेप लगा दिया, कोई कमलपत्रों का व्यजन डुलाने लगीं, कोई चोवा छिड़-

कने लगीं, कोई खस की सुगंध बहाने लगीं, कोई गु-
लाब सुँघाने लगीं, कोई हिलाने लगीं, कोई मीठी २
बातों से जगानेलगीं, परंतु यह सब यत्न व्यर्थ हुआ,
उपाय सब नष्ट हुआ, राजकुमारी का हृदय केदार विर-
हाग्निकी ज्वालोंसे विदीर्ण होगयाथा, क्यारियोंकी भांति
टुकड़े २ बनगया था, बुद्धिवती अपनी यह दशा करती
थी, पुष्पवाटिका बनाती थी, किसी में चाहकी चमेली
लगातीथी, किसीमें वचनोंका बेला जमातीथी, किसीमें
रसकी जुही छिटकातीथी, किसी में समागम की सेवती
फुलातीथी, किसी में राजपुत्र सहित सुशोभित होनेकी
मालती बनातीथी, किसी में आलिंगन का गुलाब प्र-
फुल्लित करातीथी, किसी में राजपुत्रके चरण स्मरणका
गेंदा लगातीथी, स्वधर्मकी झाड़ू बनातीथी, दुर्बुद्धिका
कचरा उड़ातीथी, पूर्ण स्नेहका यूथ बनाया, अपनी से-
वाका रहँट लगाया, प्रेमाश्रुओंका जल बहातीथी, क्या-
रियों को सिंचाती थी, दासी समझाती थीं, वचनों को
सुनातीथीं, कहतीथीं कि महारानी इतना विक्षिप्त होना
अनुचित है राजपुत्र वीर है, अत्यंतही धीरहै, धर्मधृत
है, सत्यव्रत है, जिस समय उनका मनोरथ पूर्ण होगा
फिर न वहां रहेगा, अपने समागम से आपका चित्त
प्रफुल्लित करेगा, और हे राजकुमारी आपको क्या इसका
स्मरण नहीं रहा कि "सुखान्त दुःख" और "दुःखान्त
सुख" अब आप पूर्ण सुखके पश्चात् महान् क्लेश उठा
चुकीं, अब फिर सुखकी बारी है, इतनेमें राजकुमारीका
बामभुज नेत्र फड़कउठा, शकुन यह कहउठा कि दुःख

को अब दूरकर, सुखको भरपूरकर, तब बुद्धिवती हरिका ध्यान धरनेलगी सगुनका विचार करनेलगी, इतने में दूतने समाचार दिये, तब दासियों ने यह सोचकर कि एकाएकी खुशीकी खबर मिलनेमें मृत्युका सम्भव रहता है, तब सधैर्य किसी दासी नें विनयकी कि महारानी मुझे कुछ इनाम देव तो मैं राजकुमार के समाचार सुनाऊं, आपका दुःख बिसराऊं, राजपुत्रीने कहा वह दिवस कब होगा जब मेरा हत भाग्य उदयहोगा, तबएक सखी ने दूरसे राजपुत्रका कुशलपत्रका दर्शन कराया, और कहा कि पहचानिये तो यह किसके हस्ताक्षर हैं! राजपुत्री ने अवलोकन करतेही शीघ्रतासे लेलिया नेत्र और हृदयसे लगालिया, कुशलागमके समाचार पाये. गणपतिके चरण मनाय, अपने सब दुःख बिसराय, उत्तम सब दान किये, दूतोंको इनाम दिये, फिर मंगलीक कलश स्थापित करनेलगीं, दासी सब गानेलगीं, इतने में राजपुत्रके आगमनका डंका लगा राजपुत्री का दुःख भगा, चंद्रकांति ने राजऋषिको नमस्कारकी, महाराज ने इयावासकी, और कहा आपने अपनी प्रतिज्ञानुसार मुझे दर्शन दे सनाथ किया, अपने वचनों का प्रमाण किया, राजों को ऐसाही उचित है, आपने जैसी मुझ अतीत वनवासी पर कृपाकी है इसीप्रकार जगदीश्वर तुम्हारे ऊपर किया करेगा. फिर कंठसे लगाये नेत्र मुख चुम्बन किया, अपने तन मनको न्यौछावर किया, और आज्ञांदी कि बुद्धिवती तुम्हारे योगाग्निसे झुलस रही है उसे अपना दर्शनामृत पान कराय शांति कीजिये,

आप भी विश्राम लीजिये, रतिप्रभाकी मुझसे भेंटकरा-दीजे, राजपुत्रने कहा परम उत्तम है ! फिर राजमंदिर को प्रस्थान किया, इहां जब चंद्रकांति महाराज के स-मीप गया था तब रतिप्रभा बुद्धिवती के समीप गई ! बुद्धिवती ने आदर सहित आगे बढ़कर स्वागत की, प-रस्पर दोनों ने मिलाप किया, चित्तका क्लेश भगा दिया, फिर सप्रेम सिंहासन पर सुशोभित हो अपनी २ बि-पत्ति कथा प्रारंभ की, इतने में राजकुमार प्राप्तहुआ बुद्धिवती को हृदय से लगाया फिर दोनों को समझाया कि मेरे चित्तमें जिस रीतिसे तुम दोनों बसीहो मेरेस्नेह में गँसीहो उसीरीति तुम भी परस्पर प्रीतिबढ़ाना,किसी प्रकार,का चित्तपर मैल नहींलाना, तब बुद्धिवती ने वि-नयकी कि मैं रतिप्रभाकी दासीकी संसर नहीं करसक्ती, फिर मेरी क्या सामर्थ्य जो मैं इनकी बराबरी करसकूं, मरजीके विपरीत चलसकूं, अब यही आशाहै कि रा-जकुमारी हमारे ऊपर कृपा कियाकरें,मेरे अपराध क्षमा किया करें, तब रतिप्रभाने निवेदन किया कि आप परम चतुर हो, भाषण में अत्यंतही मधुर हो, नीच ऊंचमें शीलसहनहो,मेरी जेठी बहिनहो,आपने अपनको दासी कह मुझे शिक्षा दी, मेरे चित्तकी परीक्षाली, मेरा धर्म है कि आपका सुख भंग न करूं. आपकी आज्ञा में चलूं. ऐसी वार्त्ता करते २ फिर दोनों कण्ठसे लिपटगईं, अं-तःकरणसे चिपटगईं, तब राजपुत्र ने अपने समीपबि-ठाया दोनों में यह नियम ठहराया कि एकरात्रि रति-प्रभाके इहां वासकरें, एकरैन बुद्धिवतीके निवास करें,

फिर रतिप्रभाको बुद्धिवती राजऋषि के समीप लेगई, प्रेम को बढ़ा गई, ऋषि ने कण्ठसे लगाया, रतिप्रभा को यह सुनाया कि बेटी तुम राजपुत्री हो, बुद्धिवती इस फकीर की है! आप इसपर कृपा करते रहना, इस के अपराध क्षमा करते रहना, रतिप्रभा ने विनय की कि आप महाराज हैं, हमारे शिरताज हैं, राजपुत्री हमारी जेठी बहिन है, सुखकी सदनहै. मेरा धर्म है कि मैं उनकी सेवा करूं! उनका चित्त प्रसन्न करूं तब बुद्धिवती से महाराजने कहा पुत्री! तुम देखने में दो हो वस्तुतः एकहो, आपस में मेल रखना सुखसे विहार करना, फिर राजपुत्र ने उबटन कर शरीर धोया, मार्गजनित श्रम खोया, सुन्दर शुचि भोजन किये, अंचवन कर ताम्बूल लिये अपने लश्कर का शोध लिया, सब का सुभाषण से बोध किया. फिर आपने विश्राम किया, बुद्धिवतीको कण्ठसे लगाया, आगतपतिका बनाया॥ 'यथा'

"कवित्त" आयो परदेश से सुहायो मनभायो नाह, अतुल उताल छायो हर्षित गातभो। भनत "कवींद्र" औध बीते के उराहने को, पानी चित्त चाहने को चकित सोतात भो॥ बारी बिरहानल के प्यारे प्यो निहारी आन, मिलत महारी ऐसे सुखन को सोत भो। रवि की तपित करी दिन के छिपत्त मानो, कुमुदिनी के ऊपर कलानिधि उदोत भो॥

"फिरदोनोंस्वाधीनपतिकाहुई,प्रेमकथाकी कथिकाहुई,"

"कवित्त" पुरवधू परवधू तिन सों न जोरेदीठ, तेरीओर हेरे हेरियतु हरि बरसो। कंथ वे हमारे परदेश में बितावें द्यैस, हों सपूज कैसे पल बीतत पहरसो॥ धन्य तेरो भाग भटू भाव तो तिहारो नियारो, तेरेरंग राचो तजे घरकोन घरसो। सौतजन

मालती को मालसो तिहारो वस, लाल है रहो है मालती को मधुकर सो १ पुर बधू परबधू केतक नवीनी अंग, रंग की प्रवीनी जोहै मोहै जन मन को। नेह को न ताके तिन्हें कैसहू न ताके, अवलोके अरु छाके ताक मेरई दृगन को ॥ मोही पर मोही दीठ नंद के लला की ताको, कारन कहारी यों तजे न मेरे मन को। दलनी भये ते फेर मलनी परेहू आली, अलिनी न छोड़े ज्यों कमलनी के बन को २ ॥

"इसी रीति नित्य शङ्करको मनानेलगे, आनन्द से दिवस बितानेलगे"

नवम कथा ॥

विद्यानगरसे चलने में, राजऋषिके कुछ सिखाने में, महारेखाके मायाके फँसनेमें, राजऋषिके उबेलने में, मंत्रीकेपुत्रके मिलनेमें, आगेके चलने में,

दोहा। प्रीति जो सीखो ईख सों, इहां जो रसकी खान।
जहां गांठ तहँ रस नहीं, यही प्रीति की बान ॥

स्नेह सागर अगम है. पर प्रेम पात्रों को सुगम है, जहां कुछ भरम है वहां न उसका दम है, राजपुत्र अति चतुरहै, प्रीति रीतिमें कुशलहै. ऐसे बिनीत बचन कहताथा दोनों के हृदय तृप्त करताथा इसी प्रकार कुछ दिवस व्यतीत होनेपर माता पिताकी सुधि आनेपर चित्त उद्विग्न हुआ, परस्पर सम्बाद हुआ, बुद्धिवती से कहनेलगे कि हमारे माता पिता वृद्धा हैं, बियोगाग्नि सहने में अश्रद्धा हैं जिस दिनसे मैं तुम्हारी प्रीति में फंसा हूँ उनके समीपसे चल बसा हूँ, आज पर्यन्त कुछ सुधि नहीं मिली कि सजीव हैं अथवा निर्जीव हैं, इसहेतु अब उन्हीं के चरणों का ध्यान लगरहाहै, उन्हीं के

दर्शनों की आशा में चित्त पगरहा है तब बुद्धिवती ने बिनय की कि मन बच और कर्म से तन धन और धर्म से आपके चरणोंकी अनुरागी हूँ, आपही के स्नेह सुधा में पागीहूँ, मुझे भी उनके चरणोंको नमस्कार करनेकी बांछा है, दर्शनों की आकांक्षा है इससे उचित है कि इस दासीको भी संग लीजिये, माता पिताको अवलोकन कीजिये, अपने समागम का सुख दीजिये,राजपुत्र प्रसन्न हुआ, फिर सुअवसर पाय बिनय सुनाय राजऋषिसे बिनय की कि हे जगताश्रय यद्यपि मेरे नेत्र आपके दर्शनोंसे तृप्त नहीं होते हैं, तथापि माता पिता के दर्शनों बिहीन भी संतप्त रहते हैं यदि आज्ञाहो तो जीवन सुफल करूं, हृदय में सुख भरूं. राजऋषि ने चित्तको प्रसन्न किया, राजपुत्रको आशीर्बाद दिया,और कहा कि अब हम राज तज बिरागी हुये हरि चरणों के अनुरागी हुये, अतीत अभ्यागत हैं, आकाशी वृत्तिहै. हमारे पास कुछ देने को नहीं है, तथापि पर शरीर में प्रवेश करने की विद्या आपको अर्पण करते हैं, सप्रेम ग्रहण कीजिये, फिर उसकी रीति बतलाके कण्ठसेलगा के बिघ्न विनाशक तावीज भुजपर बांधके पुनर दर्शनका बाक्यलेके राजपुत्र को बिदा किया, फिर बुद्धिवती व रतिप्रभा को हृदयसे लगाया, उत्तम धर्म सिखाया,और कहा तुम परस्पर में कलह नहीं करना, राजपुत्र को प्रसन्न रखना, हमारी सुधि लेतेरहना, अपना कुशल पत्र देते रहना, ईश्वर तुम्हारा भला करे, तुम्हारे सासश्वशुर का हृदय आनंदसे भरे, फिर इनको बिदा किया,

आपने ध्यान लगालिया, चन्द्रकांति ने राज कार्य पर मंत्रियों को स्थापित किया, महाराज की उत्तम सेवाका प्रकार बतादिया, अपनी तयारीकी दोनों राजपुत्री सहित सवारी की, लश्कर रवाने किया; अपने नगर का मार्ग लिया. आनंदसे प्रांतःकाल चलतेथे, उत्तमस्थल देख संध्या को बसतेथे दोचार दिनमें एक मुकाम कराते थे, फिर आरामसे आगे चलातेथे, इसीरीति चलनेपर कुछ दिवस बीतनेपर एकदिन उसी जलाशयपर नि-वास हुआ, जिसमें पहिले आप कूदाथा. महारेखा के माया में फँसा था, उस स्थलको पहिचान कर दोनों रा-जपुत्रियों को दिखाकर, अपना हाल सुनाया. आनंदसे दिवस बिताया, अब आगे श्रवण करने की बातहै. उस दुष्टाकी घातहै. अर्थात् जबसे राजपुत्र महारेखाके माया-जालसे निकसाथा, तबसे उसका उजड़ाघर न बसाथा, रात दिन रोतीथी. अपने मस्तकको पीटती थी, अचा-नक लश्करके उतरनेकी खबर पाई. अवलोकन करने को बाहर आई, राजपुत्रको देखतेही पहचानगई, पूर्व-कृत्यकी सुधि आगई, बिचार करनेलगी कि अपने म-नोरथ सिद्ध करनेका यही अवसरहै. शीघ्रतासे अपनी मायासे रतिप्रभाकी दासीका रूप बनाया, राजपुत्र को बचन सुनाया कि राजपुत्रियों के उदर में अधिक पीर है. जिससे वह अधीरहैं. राजऋषिके यंत्र और तावीज को मँगायाहै, शीघ्रही दीजिये। राजपुत्रने इस बातके सुनतेही राजपुत्रियों की पीर गुनतेही अपने चित्त को अधैर्य किया, यंत्र तावीज उसके हस्तदिया. उस ने उ-

त्तर दिया कि अब मैं शीघ्र जाती हूँ, इनको धोकर पिलाती हूँ, उनका क्लेश मिटाती हूँ, फिर आपको आके सुनाती हूँ, अपना कृत्य दिखातीहूँ,जब इसने वह यंत्र मंत्रपाया अपने चित्तकोहुलसाया, फिर मायाके मंत्रको पढ़ना प्रारम्भकिया,अपने कार्यमें चित्तदियी,चन्द्रक्रांति की यह दशाहुई कि सम्पूर्ण भृत्यगण और दोनों राजपुत्रियों सहित कटिपर्यंत पाषाण के होगये, जीवन से हाथ धो दिये. सब अपने २ स्थानसे पुकारते थे एक दूसरे को चिल्लातेथे, पर यह किसीकी सामर्थ्य नहीं थी कि अपनी खबर किसी को देवें, दूसरे की खबर आप लेवें, चन्द्रक्रांति अपने स्थानसे राजकुमारियों को बुलाताथा, अपनीदशा सुनाताथा, राजपुत्री चीखें मारती थीं अपनी मृत्यु जानतीथीं, सिवाय नेत्रोंसे अवलोकन करनेके, कर्णों से श्रवण करनेके हाथोंके हिलाने के और कुछ उपाय नहीं था, दूसरा कोई सहायी नहीं था, तब देवोंको मनानेलगे, बिनय सुनानेलगे, इतनेमें बुद्धिवती को राजपुत्र की कथाका स्मरण आया, रतिप्रभाको सुनाया कि यह उसी राक्षसीका स्थानहै जिसकी मायामें राजपुत्र फँसाथा,अपने कृत्यपर हँसाथा, फिरयंत्र को पाय इहांसे चल बसाथा, उसको बहुत रुलाया था अब उसने भी अपना बदला लिया, सब को यह दुःख दिया, फिर याद आई, चित्तमें समाई कि हमारे पिताने कहाथा कि बेटी जब तुम्हें सङ्कट पड़े इस मंत्रकोपढ़ना परमेश्वर की कृपासे यह अतीत तुम्हारे समीप प्राप्त होजायगा, तुम्हारा क्लेश मिट जायगा, तब रतिप्रभाने

कहा. तुम हमारी प्यारीहो, परमउपकारीहो, हम साम-
र्थ्य से हीनहैं अत्यंतही दीनहैं,जो कुछ तुम्हारे पासयत्न
हो शीघ्र करो, बुद्धिवती ने मंत्राराधन प्रारंभ किया,राज-
ऋषिके हृदय को हला दिया, उन्हों ने यह जान लिया
कि बुद्धिवती क्लेश में है, फिर हरिका स्मरण किया उत्तम
प्रकार से ध्यान किया तो जान लिया कि इन सब पर
यह बिपत्तिहै, लश्कर सब दुखित है. तब शीघ्रही दैवा-
राधन से वायुके सुखासन से राजपुत्रके समीप आया,
इहां महारेखा ने सब को कटिपर्यन्त पाषाण का जान
अपने चरित्रको सिद्धमान, राजपुत्र के समीप पूर्वरूपसे
प्रगटहुई और कहनेलगी कि कहोजी ! महाराज ! आ-
पहीने मुझे बहुत रुलायाथा, अपनेको हँसायाथा, अब
कुछ यत्नहो तो प्रगट करो, यंत्र मंत्रहो तो स्मरण करो
नहीं तो मेरे वचनोंपर ध्यान धरो, इन राजपुत्रियों का
त्यागकरो, मेरा सन्मान करो तो उत्तम है. नहीं तो मृ-
त्युसमीप है, राजपुत्र ने इसे अवलोकनकर जानलिया
कि इसी दुष्टनी ने दासीका रूपलेकर मुझे धोखादेकर,
यंत्रमंत्रलेलिया हमको यह दुःखदेदिया, तब कहनेलगा
कि मेरी दृष्टि से ओट हो ? बाहर कोटहो ? फिर कभी
ऐसीवार्त्ता करेगी तो तुझे जीवसे माडलाऊंगा ? तेरा
मांस चील्होंको खिलाऊंगा. अब न कभी तेरेपंजेमें आ-
ऊंगा ! स्वेच्छापूर्वक जाऊंगा ! इतना सुनतेही महारेखा
क्रोधित हुई, अग्नि के समानहुई, दूसरे मंत्रको पढ़ने
लगी, सबको कंठपर्यंत पाषाण करनेलगी, ऊपर से सु-
नानेलगी कि अब मेरे त्यागका फललेव ! राजपुत्रियों

का समागम करलेव! राजपुत्र ने उत्तरदिया कि हमको तेरासमागम स्वीकारनहीं, मृत्युका अपकार नहीं, तुझे तेरे गुरूकी शपथ है, अपना कृत्य पूरणकर, मेरा सुख चूरणकर, मेरा ईश्वर सहाय है, तेरी क्या बसायहै, फिर अवाच्य हुआ। इतने में राजऋषिका आगमन हुआ, राजपुत्र ने अवलोकन करतेही नेत्रों से नमस्कार की, अपनी व्यथा बतादी, राजऋषि ने पूछा यह क्याहाल है, किसका महाजाल है, जब कुछ उत्तर नहींमिला तब उत्तमरीति से देखा तो कण्ठपर्यन्त पाषाण के हैं. यह चित्तमें विचार करनेलगे कि इसका क्याकारण है आसुरीमाया है. कि दैवही की इच्छा है, इतने में महारेखा ने कहा. आप अति वृद्ध हैं, ईश्वराराधन में समृद्ध हैं, अपने स्थानको गमनकीजिये, इहांकी कुछसुधि न लीजिये, राजपुत्र मेरा अपराधी है मैंने यह मायासाधी है, तब राजऋषिको निश्चय हुआ कि यह केवल इसी दुष्टनीका कर्म है, और सब भर्म है, महान् क्रोधित हो कहा, अब तू शीघ्रही इहांसे जा? और अपने गुरूको बुलाला? फिर मंत्र को पढ़नेलगा, राजपुत्र पर फूंकने लगा, राजपुत्र शुद्धहुआ, महारेखाका चित्तमुआ, फिर उसने बहुतसे उपायकिये, मायाके प्रपंचकिये, पर राजऋषि के सन्मुख कुछ न चला, यत्न सब व्यर्थ हुये, उपाय सब नष्टहुये, तब राजऋषि ने अपने गुरूकी कृपा बता दी, इसके वस्त्रों में आगलगादी, यह जलती हुई भागी, पिताके चरणोंसेलागी, रोनेलगी. धोनेलगी. अपनीकथा सुनानेलगी. उसने अति क्रोध किया, अपना

लश्कर बुलालिया, इहां राजऋषि ने सबको चैतन्य किया, अपना शुभदर्शन दिया, राजऋषिको सब नमस्कार करनेलगे, अतिशय यश माननेलगे, महाराजने सबको गलेसे लगाया, उसदुष्टनी के पिताका हाल समझाया, कहा यह महापांपी है, मायाका बड़ाप्रतापी है, मेरेजानेपर वह अवश्य आपको सताता, इसहेतु मैंने उसदुष्टनी के वस्त्र जलादिये, जिससें वह शीघ्रही अपने पिताको बुलालावे, आगेको आपकी विपत्ति मिटजावे, इतनें में पवन प्रचण्डआई, बदली अखण्डआई, राजऋषि ने जानलिया कि अब वह दुष्ट आया, बहुतसी उपाधिलाया, राजपुत्र से कहा तुम हुशियाररहो, राजपुत्रियों के समीपरहो, मैं शत्रु के सन्मुख जाताहूं, परमेश्वरका चरित्र बतलाताहूं, उसीसमय व्याघ्र सर्प चीते आदि बहुत से आये, राजपुत्र के लश्कर के खाने को धाये, ऐसादेख सबघबराये, तब राजऋषिने बोधदिया, सबको निर्भयकिया, फिर प्रभुका स्मरणकिया, इसमायाको नष्टकिया, फिर बादर कड़कनेलगे, पत्थर बरसने लगे, लोग चिल्लानेलगे, तब राजऋषि ने रामका नाम लिया, आकाशकी ओरको फूंकदिया, शीघ्रही बद्दल बिलागया, उत्पात सब समागया, फिर महारेखा के बाप ने बहुतसी मायाकी, पर राजऋषि के सन्मुख एकभी नहींचली, तब मायाको छोड़ लश्करको जोड़ युद्धको उद्यतहुआ, महान् क्रुद्धित हुआ, तब तो राजपुत्रका चित्त उमड़ाया, हृदय में बीररस छाया, शीघ्रही अपना दलले शत्रुके सन्मुखआया, महाराज से निवे-

दन करनेलगा कि अब आप स्वस्थहूजिये, मेरा कृत्य अवलोकनकीजिये, इतनाकह शस्त्र चलानेलगे अपने, अंग बचानेलगे, कोई किसीको दपटताथा, कोई किसी से लिपटताथा, कोई किसीको मारताथा, कोई किसीको पछाड़ताथा, कोई किसी को हांकताथा, कोई किसीको झांकताथा, शिर, भुज, कटनेलगे, मृतकहो गिरनेलगे, राजपुत्र सबलहुआ, राक्षसपर प्रबलहुआ, जब उसने जाना कि यह रणसे मुखनहीं मोड़ता, अब मुझे जीता नहीं छोड़ता, अपने चित्त में विचारकिया, भागने का निश्चय किया, राजपुत्र ने उत्तालता की, अत्यन्तही बीरता की, उछलकर एक तलवार ऐसीमारी कि धड़ से मस्तक पृथक्हुआ, राक्षस गतप्राण हुआ, फिर राजपुत्र के बीरोंने परमसुधीरों ने अपने चित्तको हुलास दिया, राक्षस के दलका सत्यानाश किया, तब महारेखा चिल्लानी, अपनी मृत्यु समीपजानी, विकाल रूपलिया, अपना मुख कूपकिया, जिसको पकड़पाती, शीघ्रही चबाजाती, फिर मुखबाय, ओष्ठ चबाय, राजपुत्रकी ओर धाई, अत्यंतही समीपआई, और कहनेलगी कि अबतक भी मुझे स्वीकारकर, राजपुत्रियोंको धिक्कारकर, नहीं तो अपनीमृत्यु जानले, मेरावचनमानले, तबराजपुत्रनेउत्तर दिया कि तेरावचन वहीमानेगा, जो अपनेको राक्षसजानेगा, फिर अपने स्थानसे कूदकर, उसकीचोटी पकड़कर, युद्धभूमिमें घसीटनेलगा, और यहसुनानेलगा, कि अब मैंने तेरा वचन मानलिया, तुझे अंगीकार करलिया अब तुझही को सबकुछ जानूंगा, राजपुत्रियों को नहीं

मानूंगा, फिर चारोंओर दौड़नेलगा, उसके अंग तोड़नेलगा, तब वह चिल्लानेलगी, दीनवचन सुनानेलगी, पर अब कौन सुनताथा, इसीप्रकार रोतेहुये वह अपने प्राणोंसेगई, उसस्थान से विपत्तिगई, कौओंके भण्डारे हुये, गीधों के उतारेहुये, जम्बुकों के निमंत्रण हुये, पृथक् २ बांटलिये, राजपुत्रका यह पराक्रम अवलोकन कर राजऋषि ने कंठ से लगाया, हृदय में अति प्रेम छाया, ईश्वरका ध्यानकिया, राजपुत्रको आशीर्वाददिया, फिर दोनों राजपुत्रियोंसे भेंटकी, अपने स्थानकीबाटली, चन्द्रक्रांति ने रणभूमिका शोधकिया, अपना यंत्रमंत्र पालिया, बीरोंको इनामदिया कुछ दिवसका विश्राम किया, नृत्यवाद्य होनेलगे, निर्भयहो सोनेलगे, राजपुत्रियों के चित्तमें हुलासथा, परस्परमें विलासथा, दासी सबगातीथीं, देवोंको मनातीथीं, अपनी सेवा जनातीथीं, राजपुत्र की न्योछावर पातीथीं, जब पूर्ण विश्राम हुआ, चित्तका खेद शांतहुआ, आगेको चलनेका विचारहुआ, इतने में मंत्रीका पुत्र प्राप्तहुआ, जबसे वह राजपुत्र से बिछुराथा, बन २ में फिरताथा, अत्यन्तही रोताथा, रातको न सोताथा, राजपुत्रका ध्यान धरता था, उन्हींका शोधकरताथा, अकस्मात् इस दलको अवलोकनकर किसीसे प्रश्नकी, कि यह किसका लश्कर है, महान् भयंकर है, उत्तर मिला कि चन्द्रक्रांतिका। राजपुत्रका नाम सुनतेही दुःख सब बिसरगया, हृदय में प्रेमछागया, शीघ्रही चोबदारों के समीपजाय, सनघ वचन सुनाय, कहनेलगा कि राजपुत्र से विनयकरो कि

जो आप के मंत्रीका पुत्र इस वन में मृगकी अहेर में आप से बिछुराथा, वियोगाग्नि में जराथा, तन क्षीन. मनमलीन, बनवासी आपके दर्शनों का अभिलाषी उपस्थित है " जो आज्ञा हो " नकीब ने जब सुअवसर पाया, मंत्री के पुत्रका आगमन सुनाया, राजपुत्रने शीघ्रही निकट बुलाया, अपने हृदय से लगाया, परस्पर कुशल प्रश्नकर, परम प्रसन्नहुये, सिंहासन पर सुशोभितहुये, अपनी २ कथा कहनेलगे, ईश्वरका धन्यवाद करनेलगे, फिर मंत्री के पुत्र के स्नानकराये, उत्तम पदार्थ भोजनकराये, वस्त्राभूषण पहराये, रात्रिको विश्राम किया, विपत्तिको बिदाकिया, फिर राजपुत्र ने परमानंद से दोनों राजपुत्रियों से मंत्री के पुत्र के आने के समाचार सुनाये. और कहा जब मनुष्य के दिन बुरेआतेहैं, समीपी बिछुरजाते हैं. जब सुदिन आते हैं बिछुरे मिलजाते हैं. यहबात शोचनीयहै कि जबसे हमारा और उसका विक्षेपहुआ, तबसे उसने अपनी क्या दशा बनाई, इसी वन में अपनी उमर बिताई. छलीहोता तो अपने गृहको पलटजाता, काहेको इतनी बिपत्ति उठाता, दोनों राजपुत्रियोंने उसकी प्रशंसाकी, फिर चन्द्रकांति ने कहा कि वह हमारा परम हितकारी है, मेरी बिपत्ति बांटनेका अधिकारीहै, यदि तुम्हारी सम्मतिहो तो तुम्हारे सन्मुख उसको बुलावें, उसके वचन का सुनावें, तब बुद्धिमती जो परम चतुर थी, बिनय करनेलगी कि, स्वरूपवती स्त्रियोंके सन्मुख पर पुरुषका आना अनुचित है, फिर राजपुत्र ने कहा कि वह परम धर्मिष्ठहै, उसका यहइष्ट

है, कि आपमें मातृ भाव रखता है, किसी और पर कु-दृष्टि नहीं करताहै, तो फिर उससे क्या परदा है, फिर मंत्री के पुत्र को बुलाया, राजपुत्रियों को दिखाया, भावी बश वह रतिप्रभा पर आशक्त होगया, बाहरसे बात बनागया, अपने गूढ़ स्नेह को छिपा गया, जब राजपुत्र ने कहा कि इन दासियोंमें से जिसको आपका जीचाहे ले लीजिये, सुखसे बिहार कीजिये, तब उस ने निवेदन की कि आपने जो आज्ञाकी सो उत्तमहै, परंतु हमारा यह धर्म नहीं है, ऐसा कर्म उचित नहीं है, कि इनकी ओर मैं देखूं, किसी को अपनी करके लेखूं, इनमें मेरा मातृवद्भावहै, यही मेरे अंतःकरणसे चावहै, ऐसे बचन सुनकर राजपुत्र प्रसन्न हुआ, फिर सादर लिंवा गया, प्रेम को बढ़ागया, परंतु बुद्धिमती मंत्रीके पुत्रके नेत्रोंसे ताड़गई कि यह रतिप्रभासे मोहित होगया है, तब रा-जपुत्रके जाने पर रतिप्रभासे बोली कि बहिन! महाराज मंत्रीके पुत्रके भक्तहैं, और वह दुष्ट तुम पर आशक्तहो-गया है अब तुम्हारे हमारे धर्म का रक्षक ईश्वरहै, तुम सचेत रहना। प्रातःकालहोतेही राजपुत्रने सवारीतकी, अपने नगर की मार्गली, सुखसे चलेजातेथे, आनंदसे दिन बितातेथे॥

दशम कथा॥

मंत्री के पुत्रका राजपुत्र को धोखा देना, राजपुत्रको बंदरका रूपलेना, आफतमें फसना, फिर अपने शरीरमें आना, अपने नगरको जाना॥

दोहा। मन मलीन तन ऊजरो, मधुरी बाणी जोय।

कपटी मित्र न कीजिये, यद्यपि विष्णु सों होय ॥

लालच बुरी बलाय है, मित्रता को खाय है, इसके फंदेमें पड़, मनुष्य क्या २ कर्म करता नहीं है, क्या २ अधर्म चित्तमें धरता नहीं है॥ "यथा"

श्लोक। मातरंपितरंपुत्रं भ्रातरं च गुरुंतथा।
लोभाविष्टोनरोहंतिस्वामिनंवासुहृत्तमम् ॥

राजपुत्र मंत्रीके पुत्र का विश्वास रखताथा, वह अपने चित्तमेंकपट रखताथा, अपने मनोरथ सिद्धकरनेका अवसर तकताथा, इस का उपाय करताथा, दैव इच्छा बलवान् है। वह किसीसे भी नहीं चलायमानहै, अकस्मात् किसी स्थल में निवास हुआ, चित्त प्रसन्न हुआ, राजपुत्र मंत्रीके पुत्रको साथले शस्त्र हाथमें ले, किसी को न संग में ले, बनकी शोभा अवलोकन करने को चला गया, अपने डेरेसे दूरगया, परस्पर बात करतेथे आनंदसे चित्त भरतेथे, मंत्रीके पुत्र ने मुख उदास कर शीतल श्वास भर, चन्द्रकांतिसे कहा कि हे दीनप्रतिपालक, दुष्ट कुलघालक, ऐसा मुझे जानाजाताहै, आप की बार्त्तासे पाया जाता है, कि आप को किसी ने कुछ विद्या सिखाई है, आपने वह मुझसे छिपाई है, नीति में भी कहा है कि जिस स्वामी को सेवक से कपट हो उसकी सेवामें रहना उचित नहीं है, इस हेतु अब मुझे आज्ञाहो तो मैं परदेश को जाऊं, उदर पोषणका उपाय बनाऊं, राजपुत्र इसकी बातों पर मोहित था, प्रेम का बोहित था, तथापि उस विद्या के न बताने में, बातों से भुलाने में, बहुत से उपाय किये. पर सब व्यर्थहुये, मंत्री

के पुत्रके सनम्रभाषणसे प्रकट करनाही पड़ा, कहने लगा कि राजऋषि ने कृपा की है, पर काया प्रवेश की कला बतादी है, तब मंत्रीके पुत्र ने कहा, यह बात असम्भवहै, बुद्धिमानोंके माननेकेयोग्य नहीं है, अपराध क्षमाहो ! दासके चित्तमें बिना अवलोकन किये जमती नहीं, हृदय में थमती नहीं, यदि सत्यहै तो प्रथम उसकी रीति बता दीजिये, फिर इस मृतक बानरमें प्रवेश कीजिये, तो मुझे बिश्वासहो, आपका पूर्ण दासहो, प्रारब्ध बश राजपुत्रने उसका कपट न जाना, अपनेप्रेमकापात्र माना, पहिले उसको रीति बतलादी, फिर पृथ्वीमें लेटगये बानरकीकायामें प्रवेशकरगये, कूदनेलगे, उछलनेलगे, मित्रके चित्तको प्रसन्न करनेलगे, फिर अपनेचित्तमें विचार किया कि थोड़ीदेर इसको बहलाकर अपनेशरीरमें आकर स्वस्थान को जायँगे, आनंदसे रजनीबितायेंगे, पर न जाना कि कालबली है, मित्र अतिछली है, अतिशय क्रूरहै, अब अपने शरीरके समीप आना दूर है, सुख सब धूर है, विपत्ति भरपूर है, मंत्री के पुत्रने राजपुत्रको बानर की कायामें देखा, अपना यत्न सफललेखा, चित्तमें विचारकिया कि मनोरथ सिद्धहोनेका यही अवसर है, नहीं तो फिर शोकका घर है, शीघ्रही राजपुत्रके शरीरमें प्रवेशकिया, अपने तनका विनाशकिया, राजपुत्र यह चरित्र देखतेही जानगया कि भावीने मेरीमति हरली, मित्रने कठिन करनी करली, अब कुछउपाय नहीं. दैवपर कुछ बसाय नहीं. मंत्री के पुत्रने हस्त में धनुष लिया, इसके मारनेपर चित्तदिया, राजपुत्र वहां से भगा,

वृक्षोंकी सघन शाखोंमें छिपनेलगा, मंत्रीके पुत्रने शोचा कि अब डेरेको चलना चाहिये, इसके मारनेका कुछ उपाय रचना चाहिये, अपने कपड़ोंपर रक्त लगाकर कुछ२ नखकेसी खसोटें बनाकर डेरेको पलटआया, इहां राजपुत्रियोंको असगुन जनाया, अर्थात् दक्षिणनेत्र फड़कनेलगा, कलेजे में धक्का लगनेलगा बुद्धिमती ने जो बुद्धिकी सागरथी. अत्यन्तही नागरथी. रतिप्रभा से जो शुद्धथी. शांतिबुद्धिथी. कहा! आजका दिवस कैसा भयानक है, अपशकुन अचानकहै, चित्त थमता नहीं, किसीप्रकार रमता नहीं, इसका क्या कारण है? तब रतिप्रभा ने उत्तरदिया कि मेरीभी यहकथा है, अत्यंतही व्यथा है, पर मेरेविचार में कुछनहीं आता, जीमें कुछनहीं समाता, तुमको मैं परमचतुर जानतीहूं, अपनी हितकारी मानतीहूं, आपही की आज्ञा पालतीहूं, तब बुद्धिमती ने शोचा कि मंत्री के पुत्रकी दृष्टि तुमपर सकाम है ऐसा न हुआहो. कि उसने कुछ राजपुत्रसे छल कियाहो. अब तुम सचेतरहना, मेरेवचनों को खूब गहना, इतनेमें राजपुत्रका आगमन हुआ, डेरोंमें प्रवेश हुआ, दोनों राजपुत्रियों ने आदरकिया, सिंहासनपर शोभितकिया, राजपुत्रने विलापकर, चित्तको उदासकर कहा मैं और मंत्रीका पुत्र दोनों बनविहारको गयेथे, दूरनिकल गयेथे, अचानक एकव्याघ्र बनमें से आया और मंत्रीके पुत्रपर लपका उसने अपने को बहुत बचाया, पर उसने पकड़लिया, मैंने बहुत युद्धकिया, तथापि उसने नहीं छोड़ा, लेजाने से मुखनहीं मोड़ा, वन

में लेगया मैं अकेला पलटआया, तब दोनोंने समझा-या कि उसकी आयुष्य इतनीहीथी, मृत्यु इसी वनमेंही थी, परन्तु मनमें यह गुनतीथी, कि आज वे समय क्यों आये हैं, बातकरने में घबराये हैं; इधर उधर झांकते हैं, किसकी अब ताकते हैं, आसनपर पूरे क्योंनहीं बैठते हैं, अत्यन्तही ऐंठते हैं, सन्मुख नेत्रनहीं मिलाते हैं, किसकी भयखाते हैं, उसरोज बुद्धिवती के समीप रहनेकी बारीथी उसीके त्यारीथी, तब फिर बुद्धिवती ने विचारकिया कि राजपुत्र के कुत्सित चिह्नहैं, चित्त अति खिन्न है, बाहरकी तो परीक्षा होचुकी, अंतरंगकी करलेना उचित है, बोली! आज किसके डेरेमें बासहोगा, वहां आपकी सेजलगाईजावे, उत्तम सजाईजावे, इसका यह नियम जानानहींथा, किसी ने बखाना नहींथा, इसहेतु मौनताको धरली, दृष्टिसमकरली तब फिर बुद्धिवती ने कहा कि, आज्ञाहो तो रतिप्रभा अपने चित्त को हुलसावे, आपके समागमका सुखपावे यह उसीपर आशक्तथा, उसीका तनमन से भक्तथा, उत्तरदिया कि जैसा आपसमझो, मुझे अंगीकार है, फिर अपने मनमें सोचनेलगा कि अब अधिक इहां ठहरना उचितनहीं है, बाहर चलाआया, मंत्रियों की बातोंमें चित्तलगाया, बुद्धिवती उत्तरके श्रवण करतेही सोचगई कि मंत्री के पुत्रने छलकिया, राजपुत्रको दुःखदिया, रतिप्रभाका हाथपकड़ अपने डेरेमें लेगई, अपना शिरपटकादिया, रोनाप्रारम्भकिया, दोनों परस्पर लिपटनेलगीं, राजपुत्रका शोककरनेलगीं, फिर बुद्धिवतीने कहा, क्यों बहिन! मैंने

तुमसे प्रथमही कहाथा, कि मंत्रीके पुत्रकी दृष्टिपापिनी है,राजपुत्रके सुखके डसनेको सांपिनी है, राजपुत्र इसकी बातों में आगया, कपटीका धोखाखागया, अब ज्ञातनहीं होताहै कि किसकी कायामें है, किसकी मायामें है, कहां अब पड़ेहोंगे, कहां अब खड़ेहोंगे, अब किसके हाथका भोजन पायगा, किसके हाथका पानखायगा, कौनजल पिलायगा,कौनहाथ धुलायगा,हमारी सुधिकौन लेयगा, अपनको सुखकौनदेयगा, फिर द्वारपालोंको सचेतकर आज्ञादी कि बिना आज्ञाहमारे राजपुत्रकी तो क्यासामर्थ्यहै यदि तुम्हारे सन्मुखहो कालभीआवे तो नहीं आने देना,फिर दोनों राजपुत्रीं एकही डेरेमें रहने लगीं, परस्पर कथन करनेलगीं, कि राजपुत्रको किसका भय था, जो ऐसा उत्तर देता कि " जैसा आप समझो " इससे पूर्ण निश्चयहै कि शरीर राजपुत्र का है जीव मंत्रीके पुत्र काहै, उससमयसे यह नेम बँधा कि आप कभीराजपुत्र को बुलाती नहीं थीं, प्रेम को घटाती नहीं थीं, मंत्री के पुत्रने भी जान लिया कि मेराभेद इनको खुलगया,धोखा समागया, यदि अब जल्दी मचाऊंगा, तो जीवसे जाऊंगा,फिर न इनको पाऊंगा,इससे धीरज धरना चाहिये, कड़ा मन करना चाहिये, ऐसा विचार थोड़े समय को राजपुत्रियोंके समीप जाताथा, इधर उधर की वार्ताकर शीघ्रही बाहर आताथा, लश्कर को चलाताथा, कहीं नहीं ठहराताथा, थोड़े समयान्त में, एक उत्तम राज्य स्थान में प्राप्त हुआ, उनकी ओरसे इनका आतिथ्य हुआ,राजमंदिर में बास हुआ, सब का सुपास हुआ,तब

इस ने आज्ञाकी कि बहेलिये बन्दर पकड़ लावें, हमसे परामर्श पावें, जब चारों ओर से बन्दर आने लगे, जीव से मारे जाने लगे, लोग सब चिल्लाने लगे, इसको पापी जानने लगे, दासीं यह कृत्य राजपुत्रियोंको सुनानेलगीं; राजपुत्रीं यह बिचारने लगीं, कि बन्दर क्यों मारे जाते हैं, बधिक क्यों इनामें पाते हैं, तब बुद्धिवती ने रतिप्रभा से कहा कि अवश्य राजपुत्र बानर की योनि में है इसीसे यह दुष्ट उनको बध कराता है, अपनी भय मिटाता है, और कुछ हेतु नहीं है यही बात सही है, अब क्या उपाय कीजिये, किस प्रकार राजपुत्र का शोध लीजिये, अत्यंत ही व्याकुल होनेलगीं, राजकुमार के हेतु रोने लगीं, बहेलियोंका यह हाल था कि द्रव्य के लोभसे दिन रातबंदर पकड़तेथे, राजपुत्रके सन्मुख लातेथे, नित प्रतिके इस कर्मसे, महान अधर्म से बंदरोंका नाश हुआ, जब बहुत कमआने लगे,तबदाम बढ़ाने लगे,अतः पर्यंत बढ़ गये चार आनेसे शत मुद्रा तक चढ़गये,उस समय एक बहेलिया जो अत्यन्तही दीन,तनक्षीन,मनमलीन; पथिकालयके समीप रहताथा,एक दिवस उसकीस्त्री ने कहा कि तुम नित्य पक्षियोंकी घात करतेहो, उनको बिक्रयकरते हो तथापि पेटभर खाते नहीं,तनको बस्त्र पाते नहीं,यदि एक आध बंदर पकड़ लाते तो सौ रुपयेपाते, कुछ दिवस पेट भर खाते, बस्त्राभूषण बनाते, तब उस ने उत्तर दिया कि अपना ऐसा बश नहीं, भाग्य ऐसाउदय नहीं, परन्तु आज कहीं से घी शक्कर लादे, मलीदा बनादे, तो कल मैं जाऊंगा अपनी प्रारब्ध अजमाऊंगा, स्त्री ने उ-

पाय किया,जो कुछ उसनेकहा सो बना दिया, प्रातःकाल होतेही बंदर पकड़ने का फंदा लिया जंगल में जाने का धंधा लिया,अपने देवको मनाताथा,मार्ग में चलाजाता था, अब इस ओर ध्यान दीजिये, राजपुत्रकी कथासुन लीजिये,जबसे बन्दर बनगयां था, विपत्ति में फँसगया था, दिनरैन नहीं सोताथा, अपनी मूर्खता पर रोताथा, फल फूल कुछ खाताथा, दिवस बिताताथा, इस पर भी दैवका कोपहुआ,अधिक क्लेश प्रगटहुआ,अर्थात् जबसे राजपुत्र ने बंदरों को पकड़ते, अवलोकन किये,अपने जीवनसे हाथ धोदिये, शंकर का ध्यान धरने लगा, बिचार करनेलगा, कि अब कैसा कठिन समयहै जिसमित्र के तनका प्रस्वेद पृथ्वी पर गिरना मुझे नहीं भाता था, उसका दुःख मुझसेसहा नहीं जाताथा,अब यह आश्चर्यित तमाशा है, वही मित्र मेरे रक्तका प्यासा है, अवश्य उसी ने बेखटके होनेका बिचार किया है, तभी यह बंदरों के बधका महान् पाप लिया है,कि इसी समुदाय में राजपुत्र भी माराजायगा,फिर न कभी राजपुत्रियोंको पायगा, यही सोच करताथा वृक्षोंके कोटर में छिपता था, अकस्मात् कूद फांदके श्रमसे, क्षुधा पिपासाके दुःखसे, एक वृक्ष की खोहमें प्रवेश करगया, अत्यंत मूर्छित होगया, इतनेमें वही बहेलिया ढूंढ़ता हुआ,उसी वृक्षके नीचे बैठ कर जलपान करनेलगा अपने भाग्यको सोचने लगा, कुछ स्वस्थ हुआ तो जानपड़ा कि कोई इस वृक्षकेकोटर मेंश्वासें खींचरहाहै, बधिकदेखनेके विचारसे ऊपरचढ़ा तो क्या अवलोकन करता है कि एकबन्दर अचेतपड़ा

है, इसका चित्त प्रसन्न हुआ, भाग्य उदय हुआ, उत्ता-
लता से बंदर के गले में फांसी डालदी, रस्सी से क-
मर बांधली, राजपुत्र की आंख खुलगई, तो अपनको
बंधन में पाया, मृत्युका समय आया, बधिकसे कहने
लगा कि और सब सुलभहै, केवल मनुष्यका तन दु-
र्लभ है इस शरीर को पाकर पाप नहीं करना चाहिये,
जीवोंपर दयाकरना चाहिये, इस में बैकुण्ठ मिलता है,
कदाच लोभवश यहकार्य करतेहो तो कितनी इनाम
पावोगे, कितने दिनखावगे, फिर कैसे दिवस बितावगे,
अन्तमें पकड़ेजावगे, नरकभोगोगे, तब अपने दिलमें
सोचोगे, कि हमने बुरे कर्मकिये, जीवोंको बहुत दुख
दिये, जब बहेलिया ने बन्दर से यह बार्त्तासुनी अपने
चित्तमें गुनी कि यह तो अद्भुत चमत्कार है, बन्दर है
कि किसीका अवतार है, इसकी जबबातें राजपुत्र सु-
नैगा तो हमको बहुतसा रुपया मिलेगा, तब उत्तरदिया
कि तू बातोंमें हमको भुलाना चाहता है, अपनको मुक्त
कराना चाहता है, सो मैं तेरी बातों में नहीं आऊंगा,
तुझे राजपुत्रके समीप लेजाऊंगा, बहुतसी द्रव्यपाऊंगा,
आनन्द से कुछ दिवस बैठकर खाऊंगा, कपड़े और
गहने बनवाऊंगा, इतनाकह बन्दरको अपनी पीठपर
लटकालिया, अपने घरका मार्गलेलिया, राजपुत्रका
यहक्लेश अवर्णनीय है, अर्थात् कहां नित्यनवीन उत्तम
पदार्थ खातेथे, कहां अब नित्यनवीन लंघनेपातेहैं, कहां
उत्तम कोमल शय्यापर पौढ़तेथे, कहां अब वृक्षोंके को-
टर में छिपते हैं, कहां लक्षोंको बंधन से मोक्षकिया क-

रतेथे, कहां अब आपही बँधेजाते हैं, कहां दीनों की पुकारें सुनतेथे, कहां अब आपही विलाप करतेहैं, कहां मंत्रीके पुत्रको दुखी अवलोकन नहीं करसक्तेथे, कहां अब उसीके हाथ आप मरते हैं, इसीसे यह प्रमाण सत्यहै "दैवोविचित्रागतिः" राजपुत्र बन्धनसे बँधाहुआ बहेलियाकी पीठपर लटकाहुआ, शोकसमुद्रमें निमग्न होता था, अपने भाग्योदय पर रोताथा, बहेलिया हँसताहुआ नगरी में प्रवेश करताहुआ, थोड़ी रात्रि जानेपर, अपने गृह में पहुंच, स्त्रीसे कहनेलगा, अपना भाग्यजगा, एकबन्दर हाथलगा, फिर एकखूंटे से बांध दिया, आपने रोटीखा, विश्रामकिया, बहेलनी ने बत्ती जलाई, बन्दर के समीपआई, जब बंदर ने राम! राम! की तो वह डरगई, पीछेको हटगई, तब राजपुत्र ने कहा कि यद्यपि इससमय में बंदरहूं, बिपत्ति जालके अन्दरहूं, मेरे अभाग्य ने मुझे सताया है, तेरेबंधन में फँसाया है, कोई घरी पहरका विश्रामहै, लेनेको हरिनाम है, तेरापति प्रातःकाल मुझे राजाकोदेगा, मेरेबदले में परामर्शलेगा, जब वह मुझे मारेगा तो अवश्य इसका पाप तुम्हींको लगेगा, नरकमें बासकरोगे, दुखभोग करोगे, द्रव्य कितने दिवसखावगे, अन्त में सत्यानाश जावगे, यदि मुझदीनपर दयाकरोगे, तो आनन्द से हृदयभरोगे, अमित द्रव्य मिलेगी, कीर्त्ति चिरस्थायी रहेगी, बहेलनी अत्यन्तही आश्चर्यितहुई, इसकी बातों पर मोहितहुई, अपने मनमें कहनेलगी कि न जाने इसने ईश्वरकी कितनी भक्तिकी है, तब उसने इसपर

कृपाकर बोलनेकी शक्तिदीहै, कितनी उत्तम बार्त्ताकरता है, श्रवण करनेवालोंका चित्त प्रसन्न करता है, मेरे लड़का है न लड़की है! हृदय में इसीशोक की अग्नि भड़की है, कदाचित् यह बंदर समीपरहे, मीठी २ बातें कहे तो मनकी बोधरहे, तब बंदर से कहनेलगी कि हनुमानजी महाराज! आप अपने चित्तको स्वस्थकीजिये, मनको विश्राम दीजिये, मैं अपने जीते तुमको यहां से न जानेदूंगी, तुम्हारे बधका अपयश नहीं लूंगी, फिर दूध मलीदा खिलाया, शीतल जलपिलाया, राजपुत्रको किंचित् विश्वासआया, कि पुरुष तो मूर्खहै पर नारायण ने इसके चित्तको कोमल किया, इसके द्वारा मेरेजीवन का मुझे भरोसादिया, अब आगे भी वहीं मालिक है, समस्त सृष्टिका पालक है, अब यही यत्न ठीक है, इसीको प्रसन्नरखना नीकहै, फिर प्रेमसे कथाकहानी कहनेलगा, रात्रिको बितानेलगा, प्रातःकाल होतेही बहेलिया ने हाथ मुखधोतेही बंदर के लेजानेकी इच्छा की तब उसकी स्त्रीने शिक्षाकी कि आज और जालफटकी लेजाव, अपने भाग्य को अजमाव, कदाचित् पेटभर भोजन मिलजावें, तो फिर काहे को इसके बधका पाप उठावें, इतना सुनतेही बहेलिया को क्रोधहुआ, कहने लगा कि तुझे बंदरका बोधहुआ, अरी! पागल कल दिनभर के उपास से, भाग्य के वशसे एकबंदर मिल भी गया तो तू लेजाने नहींदेती, इनाम का रुपया लानेनहीं देती, चारदिन सुखसे खाने नहींदेती, तब बंदर ने कहा, ईश्वर का धन्यवाद है, जिसकी कृपासे इसअ-

बलाके चित्तमें दया आई, और तू पुरुष होकर, अब तक पापसे नहीं डरता, किंचित्‌ही धीरज नहीं धारण करता, मेरा तो यह हाल है "यथा"

"कवित्त" रूठे क्यों न राजा वाते कछु नाहिं काजा, एक तो से महाराजा तज कौनको सराहिये। रूठे क्यों नभाई वाते कछु न बसाई, एक तूंही है सहाई और कौन पास जाइये॥ रूठे क्यों न मित्र शत्रु आठोंयाम, एक रावरे चरणके सनेहको निबाहिये। सब जग है रूठा एक तूही है अनूठा सब, चूमेंगे अंगूठा एक तू न रूठा चाहिये॥

तब बहेलनी ने फिर कहा कि अरे भाई आज तक विचार तो देखो? कोई बंदर मुख बोलाहै, अरे यह हनुमानूका चोलाहै, कदाच इनकी कृपासे, भगवत्‌की दया से आज पेटभर भोजन मिलजावें, तो इस पापसे बच जावें, नहीं प्रातःकाल लेजानेसे नहीं रोकूंगी, तब बहेलिया कूंद फांदकर जाल फटकी उठाकर बनको चला गया, गृहके कपाट लगागया, कहां दिनभरके फेरेमें, जाल के घेरेमें, पहिले दोचारही जीव फँसतेथे, दोटके तक बिकतेथे, कहां उस दिवस पहिले जाल लगानेमें, सौपचास जानवर हाथ आने में, चित्त प्रसन्न होगया, दुःख सब बिसर गया, हँसते २ बजार में गया, तो शीघ्रही बहुत सा दाम मिलगया, तब बहेलिया ने मनके हुलास से, लाभके मिठाससे खाने पीने का उत्तम सामान लिया, कई दिनका प्रबंध किया, फिर बंदरको मिठाई ले, शीघ्र ही गृहको आया स्त्री ने जो बंदरसे बात करतीथी, अपने चित्तको रमाती थी, धोखा खाया कि आज इतने जल्दी आनेका क्या कारणहै, कहीं फिरके मति तो नहीं

फिरगई, जब बहेलियाने हँसकर कहा, अरी मुझे भगवान्की आनहै, हनुमान्जी के चरण भगवान्हैं, देख तो कहां दिनभरकी मिहनतमें दोटके लाभ होतेथे,कहां आज दोही घड़ी में कईएक दिवसको आनंद होगया, अब खूब हलुवा पूड़ी बनाव,महावीरको मिठाई चढ़ाव, तब उसने प्रसन्नहो,बंदरके पैरपड़े, फिर रसोई बनाकर बंदरको भोग लगाकर पेटभर भोजन किये, आनंद से पैर फैलादिये, फिर तो ईश्वरेच्छा से यही नियम हुआ कि, एक पहरमें बहुतसा लाभ होजाता, आनंदमें दिन भर जाता, अब उत्तम पदार्थ राजपुत्र को मिलनेलगे, कुछ२ दुःख भगनेलगे, अकस्मात् एक बड़ाभारी व्योपारी जो पथिकालयकी अटारी में उतराथा, बंदरके भाषण का शब्द उसके श्रवणगत हुआ, उसको अचंभा हुआ, तब कहारनी से कहा, देख तो इस बहेलियाका बालक कैसी मीठी २ बातें करताहै तू उसको इहां बुला ला, तो मैं उसकी बातें सुनूंगा, उसके खानेको मिठाई दूंगा, जब वह बहेलियाके इहां गई, तो वहां लड़के हैं न बालेहैं, सिर्फ एक बंदरको बिठालेहै, फिर उसने जाकर व्योपारीसे कहा कि उसके इहां लड़काहै न बच्चाहै ! एक बंदर अलबत्ता संचा है, तब व्योपारी ने कहा कि क्या तू मिथ्या भाषण करतीहै, हृदयमें कुछ लज्जा नहीं धरतीहै, अरी मूर्ख ! कहीं बालककीबातें छिपती हैं,चल मुझे दिखला,फिर आपही बहेलियाके घरमें चलागया, अचानकके जाने में इसने बंदरकी बातें श्रवण करलीं, अपने चित्तमें भरलीं, तब बहेलियेसे कहा इस बंदरको

तू हमें देदे एक सहस्र मुद्रा हमसे लेले, तब वह दोनों पैरों पर गिरपड़े, लोटनेलगे, और कहनेलगे कि, हम ने इसे छोटेसे पाला है, इसीसे अपने अपुत्री होने का दुःख टाला है, दिनभर मिहनत करके लाते हैं, संध्या को इसे खिलाकर हम खातेहैं,फिर बातोंमें रात्रि बिताते हैं, आप हमारे ऊपर कृपा कीजिये, इसके लेनेका नाम न लीजिये, तब फिर व्योपारी ने कहा कि यदि तू यह बंदर हमको नहीं देगा तो अवश्य विपत्ति में पड़ेगा, हम राजपुत्र को समाचार जतायेंगे, तुम्हें और बंदर को वहां पकड़ायेंगे, फिर क्या तेरे हाथ आयगा, तब बहेलिया रोनेलगा, अपना शिर पीटने लगा, और कहनेलगा कि; हमने इसीको अपना पुत्र माना है अपना जन्मसार्थक जानाहै, यदि आपकी ऐसेही इच्छा है तो लेलीजिये, एकशपथ करदीजिये कि हमराजपुत्र को नहीं देंगे, इसके बधका पाप नहीं लेंगे, व्यापारी ने प्रसन्नतासे लेलिया, बहेलिया को बहुत सा धन दिया, फिर अपने डेरेमें लाकर उसकी बातें सुननेलगा,अपने कुटुम्बियोंके बियोगका दुःख भगानेलगा, और बंदरसे पूछनेलगा कि कहिये! तुम्हारा क्या हालहै, कैसा यह जालहै, आप अपनी पूर्व कथा श्रवण कराइये, अपनी बिपत्तिकी वार्त्ता सुनाइये, तब बंदर ने उत्तर दिया कि "स्त्री चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः" अभी क्याहुआहै "इननयनोंका यहीबिशेष" देख लिया, और आगे देख जब तक जीनाहै तभीतक सीनाहै, काल बली है, मित्रछली है, इस विपत्तिके नि-

वारणको सब जग अयानाहै, इस हेतु अपनी कथाकह नाहक भरम गमानाहै, फिर और बातें करनेलगा, ब्योपारीको बहलानेलगा, अपनी आयुष्यके दिन बितानेलगा, ब्योपारीका चित्त प्रसन्नहुआ, आगे को यहहाल हुआ, कि जो कोई नवीन मित्र आताथा, उसको बंदरकी बातें सुनाताथा, लोग सब सुनतेथे, आश्चर्यको गुनतेथे, बस्तीमें यह चरचा फैलगई, राजपुत्रके समीप पहुँच गई, तब उस दुष्टने जानलिया कि निश्चय वहराजपुत्र है, तुरंतही हरकारेको भेजदिया, बंदरके लानेको हुक्म दिया, ब्योपारी ने बहाना किया कि यह बंदर मेरे घरका पालाहै, इसी ने मेरा दुःख टालाहै, इस हेतु इसका देना मुझे भाता नहीं, इसका बियोग सहाजाता नहीं, जब हरकारे ने जाकर उत्तर सुनाया, तब उसको महान् क्रोध आया, शीघ्रही फौजको हुक्मदिया, ब्योपारीका डेराघेर लिया, आज्ञादी कि बंदर समेत ब्योपारी सन्मुख आवे, आज्ञाके अपकारका दण्डपावे, तब ब्योपारी ने सोचा कि अब कुछ उपाय नहीं है, राजापर कुछबसायंनहींहै, बंदरसे कहनेलगा, मेरी और तेरी मृत्युसाथ है, जीवन पराये हाथहै, जहांतक बनेगा, द्रब्य लुटाऊंगा, तेरेप्राण बचाऊंगा, नहीं तो तेरेसाथ अपने प्राण गमाऊंगा, फिर न किसीको अपना मुख दिखाऊंगा, इसीप्रकारकी बातों में रात्रि ब्यतीतकी, अरुणोदयसे तयारीकी, आपशस्त्र बंधहोकर बंदरको लेकर गजपर आरूढ़हुआ, राज़महल का मार्गी हुआ, पुरबासियों ने यह समाचारपाये, ब्याकुलतासे उठकर धाये, कि आज वह बाचाल बंदर भी

माराजाताहै, राजपुत्रको नहीं मालूम यह क्या भाताहै, चारों ओरसे एकत्रहुये, बंदरकी बातोंके श्रवण करनेके उत्सुकहुये, राजपुत्रियोंने जब यहखबर पाई,अपने तन की सुधि बिसराई, उनको पूर्ण निश्चय होगया कि सृष्टि भरके बंदर मुख बोलते नहीं हैं, अपनाहाल खोलते नहीं हैं, यह अवश्य राजपुत्रहै,परंतु अबक्यायत्न कियाजावे, कैसे उसके प्राण बचायेजावें, लोगोंसे पुछवाया कि वह बंदर किस मार्गसे जायगा, हमारे अवलोकनमें किसप्रकार आयगा, तब सब ने कहा कि इसी झरोखेके नीचे से निकसेगा, इतना सुनतेही बुद्धिवती एक "गंगाराम" का पिंजराले पिछली रातसे झरोखे में बैठगई, मार्गके ओर दृष्टि लगगई, अपने सिपाहियोंसे कह दिया कि जब ब्योपारी बंदरको लेकर इहां आवे,रोक दियाजावे, हमभी बंदरकी बातेंसुन लेवेंगे,फिर आगेको जानेदेवेंगे, ब्योपारी अपनी अदशा बनाताथा,नेत्रोंसे अश्रुबहाता था,सबको रुलाताथा,राजमंदिरकी ओरको चलाजाता था, बंदर अपनी बातों को सुनाता था, सबको समझाता था, कि यह संसार माया का जाल है, सब पर प्रबल काल है, कोई भिक्षुक बेहाल है, कोई धनी, और नृपाल है, कोई दीन और दुखी है, कोई जन्मही से सुखी है, कोई किसीका मित्र है, कोई किसी का शत्रु है, कोई किसीकी माई है, कोई किसीकी दाई है, कोई किसी का भाई है, कोई किसीका सांई है, कोई किसीका सेवक है, कोई किसीका मालिकहै,कोई पण्डित सज्ञानहै,कोई मूर्ख अज्ञान है, कोई बालक अजानहै, पर मृत्यु सबकी

समानहै, किसीकी आयुष्य दुष्ट कर्मसे घटगई,किसीकी सत्कर्म से बढ़गई, किसी ने उत्तम राज किया, अमित दान दिया, पृथ्वीपर यश लिया, किसी ने महान् पातक किया, जीवोंको अपने सुखके हेतु बधं किया, मरने पर सब यहीं पड़ारहा, राजमन्दिर खड़ारहा, तीन हाथ के चेटके में जलगये, ऊपरसे मुकरबे बनगये, कुछदिन कुटुम्बियों का प्रेम रहा, झाड़फूंक से स्वच्छ रहा, अन्त में गिरगये, पत्थर सब बिखरगये, फिर नहीं जानपड़ता कि यहां किसको भस्म कियाथा, किसका मन्दिर बना दियाथा, लोगों की यहदशा है, मोहमें सब फँसा है, अनेक यत्न से कमालाते हैं, उनको खिलाते हैं, पर अन्त में कोई कामनहीं आते हैं, अकेलेही आप उठकर चलेजाते हैं, कोई योगी हैं, यती हैं, जिनकी सुंदर मति है, कोई संसार से विरक्त हैं, ईश्वरपर आशक्त हैं, किसीने सुंदर नवयोवनाको अवलोकनकी, अपने कुल की मर्यादको त्यागनकी, उसीके पीछे भरमता है, मित्रों से छलकरताहै, सबको चलायमान जानताहै, आपको अचल मानता है, यह सबजगत्का तमाशाहै, बारिका बताशाहै, किसीको किसीकी आशाहै, कोई किसीके रक्त का प्यासाहै, कोई अपने कुबोल से माराजाता है, कोई अपने सुभाषणसे इनामें पाताहै,अब यह कठिनता आई है, ईश्वर को न जाने क्याभाई है, यद्यपि मैं किसीको नहीं सताताहूं, पर इस बोलने के कारण मारा जाताहूं, भाई ! रामनाम सत्यहै, इसीमें सबकी गत्यहै, आपलोगों को मैंने क्या दियाहै, आपका क्या लेलियाहै,जो हमको

घेरे आतेहो, मेरे शोकमें अपनको फँसाते हो, यह सब स्नेह का कारणहै, इतनेमें हस्ती झरोखेके नीचे आया, द्वारपालोंने ठहराया,बुद्धिवतीने पूछा बंदर तुम्हारा क्या हालहै? कैसा जंजालहै, राजपुत्रने राजपुत्रीकी आवाज पहचानी, उसकीओर को आंखतानी, तो क्या देखा कि बुद्धिवती झरोखेमें बैठरही है, बिरहाग्निसे तप रही है, राजपुत्रने रामका नाम लिया, प्रभुका ध्यान किया,फिर कहनेलगा कि राजपुत्री मेरीओर ध्यानदो,बिपत्ति कथा श्रवण करलेव, मेरी प्रारब्धने मुझे भुलायाहै, मित्रकी बातों में फँसाया है,मुझे बंदर बनाया है, वह राजपुत्र कहायाहै, शुक पिक मिष्ट बोलने से उत्तम पदार्थ खाते हैं, हम इस भाषणके कारण मारेजातेहैं, अब थोड़ा विश्रामहै, फिर मरनेका काम है, अब कुछ उपाय नहीं है, मेरी कुछ बसाय नहीं है, एक ने देख लिया है, मेरा हाल समझलिया है, दूसरे को चैतन्य करदेव, कि एक दृष्टि निरखलेव, बुद्धिवती को पूर्ण निश्चयहोगया, कि राजपुत्र है, शीघ्रही 'गंगाराम' को गतप्राणकर पिंजरे को बाहर निकालकर बोली, संसार को देखलेव, इस ओर ध्यानदेव, दुष्टमित्र छलकरता है, सन्मित्र दुःख भरता है, अपने चित्तको स्वस्थकरो, सुअवसरको हाथ धरो, परमेश्वरका ध्यानधरो, अपना जीवन सफलकरो, राजपुत्रने पिंजरेकीओर ध्यानदिया, गंगारामको अवलोकनकिया, जानलिया कि राजपुत्री पहचानगई, मेरा हालजानगई, शीघ्रही ब्योपारी की गोद में लेटगया, गंगाराम में आगया, तोता फड़कउठा, राजपुत्रीका जी

धड़कउठा, पिंजरेकोले अंदरगई, रतिप्रभासे मिलगई, कहनेलगी, लेवजी ! यह प्रीतमप्यारे हैं, अपने नेत्रोंके तारेहैं, फिर दोनों हँसनेलगीं, अपनी२कथा कहनेलगीं, राजपुत्रको समझानेलगीं, कि परमेश्वरका धन्यवादकरो, उसी के चरणोंका ध्यानधरो, अब शीघ्रही कार्यसिद्धहो जायगा, यह सबदुःखबीतजायगा, राजपुत्रको बोधहुआ, फिर अपने शरीर प्राप्तहोनेका भरोसा हुआ, रामराम! जपनेलगे, सप्रेमबात करनेलगे, इहां ब्योपारीने, बंदरके अचानक लेटजानेपर चित्तदिया, तो मृतक अवलोकन किया, रोदनका शब्द उच्चकिया, अपना शिर पीटलिया अश्रुवोंका नाला बहादिया, फिर चित्तको समाधानकिया अपने मरने को शस्त्र लिया, तब मंत्रीने निवेदन किया कि सेठजी यह आप क्याकरते हो? ब्यर्थ क्यों मरतेहो? बंदर का नेम रहा, आपका प्रेमरहा, उसको मार्गही में मृत्युने सताया, उसके जीका क्लेश मिटाया, आपको इस कलंकसे बचाया, कि सेठजी ने कुछ उपकार न किया, बंदर को शत्रुके हाथ से मरने दिया, कालपर किसीका वश नहीं चलता, पुत्रके साथ पिता नहीं मरता, फिर तो यह पशु है, यदि कोई इसपर बलात्कार करता, इसके प्राण हरता, तो मरना ठीकथा, सबको यह मत नीकथा, मंत्रीका करना निदान हुआ, सेठजीका चित्त समाधान हुआ, पुरवासी यह समाचार पानेलगे, जोर से चिल्लाने लगे, परस्पर कहने लगे कि बंदर मतिका आगर था, बुद्धिका सागर था, उसने यह बिचार लिया अपनी मृत्युका समय जानलिया, मार्गही में प्राणायाम

किया,आपने परमधाम लिया,उस दुष्टने यह खबरपाई, बंदर की लाश को अपने सन्मुख मँगाई, टुकड़े २ कटादी, अग्नि में जलादी, भस्म को बहादी, तबमन को समाधानी दी, फिर राजपुत्रियों के समीप गया, उसदिन उन्होंने अधिक प्रेम किया, इंसने अपने मनमें सोचा कि राजपुत्रियों में इतने प्रेम का चाव नहीं था, हम पर इतना भाव नहीं था, यह सब बन्दर के मरने का कारण है, अब इनको निश्चय होगया. कि राजपुत्र अपने जीव से गया, अब जल्दी नहीं करना चाहिये किंचित् धीरज और धरना चाहिये, तब बुद्धिवती ने हँसकर कहा, हम को एक मृग शावक मँगादेव, उसको हम पालेंगे, अपना दुःख ठालेंगे, मन्त्रीके पुत्रने शीघ्रही मँगादिया, फिर राजसभाको गमन किया, अब नित्य अपने नियम पर आते थे, राजपुत्रियों का अधिक प्रेम पाते थे, अपने मनोरथ सिद्ध होनेके भरोसेपर फूले नहीं समाते थे, एक दिवस बुद्धिवती ने मन्त्र किया, राजपुत्रको समझा दिया,फिर पिंजरेको पलंगके नीचे रखकर मृगपुत्र को दबाकर रोने लगी, मंत्रीके पुत्र को बुलानेलगी, शीघ्रही वह समीप आया, राजपुत्रियोंको दुखी पाया,हँसकर कहने लगा, दुःख का कारण पूछने लगा,बुद्धिवती ने प्रथमही से मृगको जीरण करदियाथा,मंत्रीके पुत्रके आतेही जोर से दबातेही गतप्राण कर दिया, शोकसे चित्त मलीन करलिया,रोनेलगी,धोनेलगी,अपने केश नोचने लगी, और कहनेलगी कि आपको हमारा सुख स्वीकार हो प्रेम अंगीकारहो तो इसको शीघ्रही सजीव करो,हमारा

चित्त प्रसन्न करो, नहीं तो अपनी बाटधरो, हमारी मृत्यु अवलोकन करो, जब मंत्रीके पुत्रने कहा राजपुत्री तुम यह क्या कहतीहो ? कहीं मृतक भी सजीव हुये हैं तब बुद्धिवती ने कहा. क्या आप विस्मृत होगये, उस समय तुमने हमारी मैनाको नहीं।जिवायाथा, हम को यह कौतुक नहीं दिखायाथा, जब मंत्रीके पुत्रने अपना निश्चय लगानेको, बातके दृढ़ानेको फिर पूछा कि हम ने किसप्रकार जिवायाथा, तुमको हँसायाथा, तब बुद्धिवती ने भौंह चढ़ाई, बात को बनाई, आप हमसे हँसी करतेहो; तुम क्या नहीं जानतेहो ! अपनको पलंग पर लिटा दियाथा, मैनाको उड़ा दियाथा, इसको भावीवश निश्चय हुआ कि अवश्य राजपुत्र ने मैना सजीव की होगी, तब तो इसने उसकी रीति बतलाई,हँसकरकहा, यदि तुमको यही तमाशा फिर अवलोकन करनाहै तो मृगको जमीन पर लिटादो ? राजपुत्री ने तुरंतही फेंक दिया, मंत्रीके पुत्रने बिचारकिया कि थोड़ी देर राजपुत्री को हँसा देनाहै अपना काम निकास लेनाहै, परंतु यह न शोचे कि अब इसशरीरका स्पर्शहोना कठिनहै,शीघ्रही पलंगपर लेटगया, मृगके शरीर में आगया, कूदने लगा, फांदनेलगा, राजपुत्रियोंको हँसानेलगा, राजपुत्र ने यह अवसर पाया, ईश्वरको मनाया, शीघ्रही अपने शरीर में आया, उठकर बैठगया, मंत्रीके पुत्रका जीव इस चमत्कारके देखतेही ऐंठ गया, कूद फांद भूलगया भयसे जी सूखगया, बुद्धिवती ने कुछ पढ़कर मृगपर फूंकदिया,पर काया प्रवेश बिस्मृत करादिया, फिर राज-

पुत्रके गलेलगीं, अत्यन्तही प्रेममें पगीं, दानधर्मकरने लगीं, कुल देवोंको मनानेलगीं, राजपुत्रने सेठको और बहेलियेको बुला लिया, अपना हाल सुना दिया, फिर बहेलियेको अमित द्रव्य देकर, उसका दरिद्र भगाकर बहेलियोंका सरदार किया, सेठ जीको परामर्श दे बिदा किया, जब राजपुत्रका यह भेद खुलगया, सबका हृदय आनंदसे भरगया, वहांके राजाने इनका उत्तम सत्कार किया, मंत्रीके पुत्रको धिक्कारदिया, राजपुत्रके मंत्रीआदि सुख पानेलगे, आनंदसे दिवस बितानेलगे॥

एकादश कथा॥

राजपुत्रका चलना, समुद्रकेतीर बासकरना, नौका की सवारी करना, फिर से बिपत्ति उठाना, एक ऋषिकासमागम, फिर पूर्वस्थानपर आगम॥

दोहा। तुलसी सीताराम कहु, पाप कितक अनुमान।
ज्यों पनहारी जेवरी खैंचत कटत पषान॥

प्रभू के चरणों का स्मरण करने से उन्हींकी सुन्दर मूर्त्तिका ध्यानधरने से कौनसी ऐसी व्यथा है जो जीवों की निवारण नहीं होतीहै, कौनसी ऐसी बिपत्ति है. जो विदीर्ण नहीं होतीहै, किन्तु महान्पापियोंके पाप भस्म होजाते हैं, यथा, "उलटानाम जपत जगजाना"। वाल्मीकि भये ब्रह्मसमाना"— चंद्रक्रांति दोनों राजपत्नियों सहित विहार करनेलगा, आनन्द से हृदय भरनेलगा, फिर माता पिताका स्मरणआया, कूचका डंकालगाया, वहांके राजासे प्रजासे बिदाहुआ, अपने देशका मार्गी हुआ, दोचार दिवस चलतेथे, दो एकदिन विश्राम क-

रतेथे. इसीरीतिसे एकसमुद्रके तटपहुँचगये, लोग सब उतरगये, सुन्दर शुचि भोजनकिये, उत्तमविश्रामकिये, फिर कुछ दिवस बाकीरहे दोनों राजपुत्रियोंसे कहनेलगे, कि मेरी इच्छा है कि तुमसमेत जहाजपर सवारहोवें, इस अपार समुद्रका विहारकरें, तब बुद्धिवती ने कहा, कि हमारीमति यह है कि एकबार माता पिताके दर्शन कीजिये, उनके समागमका सुखलीजिये, फिर जैसी इच्छाहो सो करते रहिये, तब राजपुत्र ने उत्तरदिया कि अब अपना नगर समीप है, एकही यह द्वीप है, अब किसीकी ओरसे सन्देह नहीं है, सेवकोंकी ओरसे भय नहीं है, फिर क्याडर है. तब फिर राजपुत्री ने कहा कि अभी एक बिपत्तिसे मुक्तभये हो, उसका क्लेश क्याभूल गयेहो, इसमें कोई थलनहीं है, जलपर किसीका बल नहीं है, इसहेतु अपनी इस अभिलाषाको शेषरखिये, स्वस्थानको गमनकरिये, जब चन्द्रकांतिकी आंखबदल गई, राजपुत्रियोंकी ओरसे फिरगई, आपही जलविहार को तैयारहुआ, तब दोनों राजपुत्रियों ने बिचारकिया कि यदि राजपुत्रको कुछ क्लेशहुआ अपनको सुखहुआ तो मनुष्य यही कहेंगे कि स्त्री किसकीहुई है, अब जो कुछ प्रारब्धमें हो सो, राजपुत्रही के साथ भोग करना धर्महै, यही अपना कर्महै, "परमउत्तम" कहकर संग हुईं, जलविहारको उत्सुकहुईं, फिर नौकापर आरूढ़हुये, जलाशयमें मार्गीहुये, प्रसन्नतापूर्वक विहारकिया पलटनेका बिचारकिया, अकस्मात् पवन प्रचण्ड आनेलगी, लहरें बढ़ानेलगी, नौका उछलनेलगी ठोकरें खानेलगी,

सेवक सबरोनेलगे, परस्पर कहनेलगे कि अब क्याकियाजावे? कौनसा लंगर लगायाजावे? परन्तु उपाय सब व्यर्थहुये, यत्नसब नष्टहुये, अन्तमें नौकाके टुकड़ेहोगये, मनुष्य सब जलमें निमग्नहोगये, चन्द्रक्रांति एकपटिये के सहारे से बहताजाताथा, कभी डूबता; कभी उतरता जाताथा, दोनों राजपुत्रियोंकीभी यही दशाथी पृथक्२ बहतीजातीथीं, राजपुत्र अत्यन्तही व्यथितहो, श्रमसे शिथिलहो भाग्यवश किनारेपर आलगा, जलार्णव से भगा, परशक्तिनहींथी,, धीरे२ लोटतेपोटते सूखेमेंआया, किंचित् विश्रामपाया, फिर आगेको चलताथा, क्षुधासे चलानहीं जाताथा, प्ररन्तु उससीमाके मनुष्य दयावान् थे राजपुत्रको अवलोकन करतेही उनके चित्तमें दया आई. दौड़कर उठालिया, अपनेकंठसे लगालिया, फिर कुछ उत्तम भोजनदिया. सुवाणीसे भाषणकिया. राजपुत्र का कुछ दुःख निवारण हुआ. जीवन का कारण हुआ, फिर वह अपने गृहको लेगया, राजपुत्रको उत्तम बास दिया, सबप्रकारका भरोसादिया. परंतु राजपुत्रको स्वस्थता नहींथी, चित्तमें चैननहींथी, दिनरात राजपुत्रियों के वियोगमें मरताथा. उन्हीं का शोक भरताथा, यही बिचार करताथा कि. हमारी प्राणप्यारियों की क्यादशा हुईहोगी, किसने उनकी सहायकीहोगी, सजीव होंगी अथवा कालवश हुईहोंगी. इसका कुछ ज्ञान नहींहोसक्ता, अज्ञात कोई सहाई नहींहोसक्ता, सिवाय नारायण के अब किसका स्मरणकरें, किसके चरणोंका ध्यानधरें. वही सब जगत्का कर्त्ताहै, वही सब सृष्टिका भर्त्ता है,

वही हमारा क्लेश हरेगा, वही हमारा चित्त फिर आनंद से भरेगा, इसीरीति दिन रात शोचताथा,नेत्रोंसे अश्रु मोचताथा, रामनाम जपताथा, इसीमें धीरज धरताथा, एकदिवस स्वप्नमें क्या अवलोकन करता है. कि कोई सुंदर एक पर्वतहै उच्च तांके कारण गर्वितहै. वहां कोई ऋषिकावासहै,अत्यंतही शुचि आवासहै,दीन दुःखी बहुत आतेहैं.सबके मनोरथ पूर्णहोतेजातेहैं,इतनेमें आंख खुलगई, तो उस गृहके स्वामीसेपूंछा कि इहां कोईसाधु महात्माका स्थानहै ? तब उसनेकहा कि मैंभी यह आप से कहना चाहताथा. परंतु आजपर्यंत आपकी दुर्बलता के कारण नहींकहा, अब श्रवण कीजिये, इस नगर से पूर्वकीओर सघन बनहै, सुंदर उपबन है, उसी में एक पर्वतकी शृंगहै परममनोहरहै उसपर उन महात्मा का स्थानहै. भूत, भविष्य, वर्तमानका उनको ज्ञान है जो कोई उनके समीप जाताहै, अपने मनोरथ पूर्णकरके आताहै, आपभी अवश्य उनके समीप जाइये, अपनी बिपत्ति सुनाइये, परमेश्वरकी दयासे आपकाभी मनोरथ पूर्ण होजायगा, चित्तका क्लेश मिटजायगा, यद्यपि आप पंथसे अज्ञात हैं. तथापि मैं मार्ग को साथी देताहूं,आपको पहुंचाये देताहूं , फिर कुछ सवारी दे बिदा किया. वहांका हालसमझादिया , जबराजपुत्र वहां पहुंचा तो दिब्य स्थानके अवलोकनकरतेही भरोसा हुआ कि अवश्य कार्य सिद्ध होजायगा , संपूर्ण दुःख मिटजायगा , फिर मुनिमहाराज के चरणों को नमस्कार की. मुनिने आशीर्बाद दे कहा। चन्द्रकांति तुमने बहुतसी बिपत्तें

उठाई हैं, मनेप्सित पूर्णकर पाई हैं तुमने रामनाम जपा है इसी से तुम्हारे ऊपर उनकी कृपा है, अब तुम अपने चित्तको स्वस्थकरो. नारायणका ध्यान धरो, राजपुत्री पतिव्रताहैं शुचिआचरण धर्मरताहैं, शीघ्रहीआपको प्राप्तहोंगी, बिपत्तेंसब समाप्त होंगी अपने माता पितासे मिलोगे, उनके चित्तका क्लेश हरोगे, सुखसेउत्तम राज करोगे, अब न कभी बिपत्तिमें पड़ोगे, फिरएकान्त में लेजाकर मनेप्सित रूप लेने का यत्न सिखाकर बिदा किया, मस्तकपर हाथ रखदिया, राजपुत्रका आनन्दसे हृदयभरगया, महाराज के चरणों पर गिरगया, नमस्कारकरके बिदा हुआ, एकओरका मार्गीहुआ, थोड़ीदूर पर क्याचमत्कार देखता है कि एक सुन्दर नदी बहरही है उस में यह अद्भुत कौतुक होरहाहै कि कोई एकपदार्थ थोड़े२समय पर वहां आता है, रंग बिरंग कमलवत् फूलसा बनता जाताहै. राजपुत्रको परमआश्चर्य्य हुआ उसके कारण के जाननेको उत्सुक हुआ, जिसओर से नदी बहतीथी उसी ओर को चलदिया, किंचित् दूरजाने पर एक पर्वतका समीप आनेपर एकदिवाल दृष्टिपड़ी, उसीमें से वह नदी बहतीथी, उसके चारोंओर राजपुत्र ने भ्रमणकरके देखा परंतु प्रवेश करनेका मार्ग नहींमिला. तब मुनिका ध्यान किया. गंगारामका स्वरूप लिया. उड़कर दिवालपर गया, तो उसके अन्दरक्यादेखता है कि एक सुन्दर बाग है. दिव्य उसकेभाग हैं, एक उत्तमजलाशय है. उसपर बारहदरीका बंगला है। उस में एक पलंगपर कोई दुशाला ओढ़े सो रहाहै, और

एक सींके पर एक स्त्री का मस्तकरक्खाहै,जिसके रक्तसे जल में वह चमत्कार बनता था, उस मस्तकपर जब राजपुत्र ने उत्तमरीति से ध्यान दिया तो रतिप्रभा का शीश पाया,इसका चित्त अवलोकन करतेही भरआया, परंतु राक्षसी मायाको जानगयाथा, उसका कुछ२ भेद पागयाथा. इससे मनको धीरजदिया कि पहिले इहांका हाल जानलेना चाहिये फिर कुछ यत्न शोचना चाहिये तब एक सघन बृक्ष में बैठरहा. थोड़ा दिवस शेषरहा, तब एक राक्षस आया, आतेही उसने मस्तकको धड़ से मिलाया, एक पत्तीको सुंघाया, रतिप्रभा उठबैठी, तब राक्षसने कुछ भोजन कराया, अपना हृदयसे प्रेम बताया, पर रतिप्रभाका यह काम था, रोनेका कामथा, उसने बहुत समझाया, पर कुछ काम न आया, फिर क्रोधितहो एकतलवारमारी,धड़से गर्दनपृथक्करडाली, और उसी सेजपर पूर्व्ववत् लिटादिया, वही दुशाला उढ़ादिया, फिर अपना मार्गलिया, जब वह चलागया, तब राजपुत्र समीप आया, अपना पूर्वरूप बनाया. फिर उसी रीतिमस्तक धड़से लगाया, उसीपत्तीको सुंघाया, रतिप्रभा उठबैठी, राजपुत्रसे लिपटगई, राक्षसकी भय से चिमटगईं, परस्पर खूबरोये बिरह जनित दाग धोये जब रतिप्रभाने कहाकि अब इहांका रहना उचित नहीं है, मुझे राक्षसकी बातें सुनना नहींहै, तब राजपुत्र तोता बना, राजपुत्रीको मैना बनाया, बुद्धिवतीके खोज में चित्त लगाया, राजपुत्रीको अपना हाल सुनाया, राजपुत्री ने कहा कि जलके निमग्न होनेपर जब किञ्चित्

हवा लगी, जलकी सर्दी भगी, तब नेत्र खुले तो अपन को इसदुष्टके बिमानपरपाया, फिर इसबागमेंलाया, उस दिवससे नित्यका यहीनियमथा, जो आपके दृष्टिगोचर हुआ, इसीप्रकार परस्पर अपनी२ कथा कहतेजातेथे, नित्य नवीन फल फूल खातेथे. उत्तम वृक्ष अवलोकन कर रात्रि बितातेथे, अब इसओर ध्यान दीजिये, बुद्धि-वतीकी कथा श्रवण कीजिये, जलमें डूबती उखरतीथी प्रभुको स्मरण करतीथी, अकस्मात् उसके समीप एक राजाकी नौका प्राप्तहुई बुद्धिवती पर उसकी दृष्टि हुई, सेवकोंको आज्ञाहुई कि इसको शीघ्रही निकासलेव? हमारी नौकापर चढ़ादेव? बहुतसे मनुष्य कूदपड़े, राज-पुत्रीको उठाकर नौकापर सवारकिया, उसके जीवनका उपचार किया, जब राजपुत्रीकी आंखखुली अपनको बिदेशी मनुष्योंके समीप पाया. लज्जांसे मुख छिपाया, तब उसराजाने समझाया कि ईश्वरका ध्यानधरो, अपने चित्तको प्रसन्न करो, हमको स्वीकृतकरो, । आनंदपूर्वक बिहारकरो! बुद्धिवती ने उत्तर दिया, कि हमको परपुरुष भाता नहीं, किसीका ऐसा भाषण सहाजाता नहीं. इस प्रकार के जीवनसे मृत्यु उत्तमहै, हमको उसी समुद्रमें छोड़ दीजिये, इतना उपकार कीजिये, कोई जल जंतु हमको भक्षण करजायगा, उसका उदर भरजायगा, हमारा क्लेश मिटजायगा, तब राजाने शोचा कि इसपर बलात्कार करना अच्छा नहीं है, फिर अपने नगर में पहुंच, एक उत्तम स्थानमें उसका बास दिया, सुंदर प्र-बंध बांधदिया, दास दासी नियत करदिये, चौकी पहरे

लगादिये, बुद्धिवती राजपुत्र और रतिप्रभाको रोतीथी, अपनी जान खोतीथी, खातीथी न पीतीथी, मिलनेकी आशपर जीतीथी, जब एकांत पातीथी, नजरबाग में जातीथी, आंशुवोंको बहातीथी, एक वृक्षके नीचे बैठ कर दुःखसमुद्रमें पैठकर, राजपुत्रका स्मरणकर अपने पतिव्रतका प्रमाण कर, नारायणका ध्यान धरतीथी, अपनी बिपत्ति निवारणकी बिनय करतीथी, एक दिवस वही 'मैना' जिसके बचनोंपर राजपुत्रने गृह त्यागाथा मृगके पीछे भागाथा, यह उसको ढूंढ़ा करतीथी, बन उपवनमें उड़ा करती थी, उसी वृक्षपर आगई, सघन शाखामें समागई, अपने बचन सुनानेलगी, राजपुत्री की कथा पूछनेलगी, कहनेलगी कि कहिये आप राजकुमारीहो? किसके बिरहकी मारीहो? तुम्हारे इस रोदन से मेरा कलेजा फटाजाताहै! तनसे प्राण निकसाजाता है! ऐसा कुछ मेरेचित्तमें आताहैं कि आप कहीं हमारेही राजपुत्रकी तो सताई नहींहो! उसीके बियोगमें तो यह दशा बनाये नहींहो! बुद्धिवती इसकी बातोंको मान गई, अपने चित्तमें जानगई कि यह अवश्य वही मैना है, जिसके संवादसे राजपुत्रने राज तजदिया है, बन२ का बास लियाहै, कदाचित् यह पुरातन संबंधन होता तो इसको मेरा दुःख न सताता, इसके बचनोंपर शीघ्र ही मेरा निश्चय नहीं आता, इसहेतु इससे कुछ दुचित नहींहै, अब अपना भेद गोप्य करना उचित नहीं है, अक्षर २ से अपनीकथा सुनाने लगी, मैनाकी शंका भगाने लगी, मैना चंद्रकांति का नाम सुनतेही राज-

भित हुआ,तब किसी दासने विनयकी कि राजमंदिरको घेराहै, दल चहुँ फेराहै, तब राजपुत्रने कहा, इसका हम को भयनहींहै,ईश्वरको नमस्कृत हुआ शस्त्रले उठखड़ा हुआ, जब बाहरआया तो सबने प्रणामकिया,पकड़नेका फिर न नामलिया,राजाने जब यहसमाचारपाये,आपही सैन्य ले उठधाये, राजपुत्रके सन्मुखआतेही, नेत्रोंसेने-त्र मिलातेही, फौज सब बदल गई, उलट कर राजाको पकड़गई, राजपुत्रके समीप लादिया, हाथ जोड़ निवेद-नकिया,कि आज्ञाहो सो करैं,राजपुत्रने राजाको बंधनसे मोक्षकिया, अपने कंठसे लगालिया, अपराधसब क्षमा किया,अपने समीप बिठालिया, फिर अपना हाल सुना दिया,तब राजा अति लज्जितहुआ, राजपुत्रका सन्मान किया, फिर इनके लश्कर का शोधकराया, मानसहित दलमें पहुंचाया, आनन्दके बाजे बजने लगे, भृत्यसब न्योछावरें करनेलगे, नाचरंग होने लगा, सबको इनाम मिलनेलगा, दान हुआ, धर्म हुआ, उत्तम सब अर्चन हुआ, रामनाम जपनेलगे, सुखसे बासकरने लगे ॥

द्वादश कथा ॥

राजपुत्रके अपने नगरमें आनेकी माता पितासे मिलापकरनेकी मंत्रीके पुत्रको बध करने में फिर उत्तम राज्य करने में ॥

दोहा रामनाम मणि दीप धर, जीभ देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहेर,जो चाहसि उजियार॥

रामनाम जपनेसे हियेमें धीरज धरनेसे कौनसा फल प्राप्त नहीं होताहै, कौनसा क्लेश नाश नहीं होता है,

जीव सब मायाके बशमें हैं ईश्वर स्वबशमें है, इसी से प्रभुके दास अविनाशी होतेहैं, उसीके शरणमें निर्भय सोतेहैं, मायाको मिटातेहैं, बैकुंठलोक पातेहैं, जगतसब मायाका प्रपंचहै, इसी में सब भूल रहेहैं, दुःखको सुख मान फूल रहेहैं, मोहका सागर अपार है, इससे तरना दुशवार है, लोग सब इसमें फँसतेहैं, परस्पर हँसते हैं, इससे प्रभुका स्मरण कर, बिपद्वार्ताको विस्मरण कर लेखनीका चित्त प्रसन्न हुआ, सुखकी वार्ताके लिखने को उत्साह हुआ, अर्थात् राजपुत्रने जब शरीर पुष्ट करलिया, तब आगेको पयान करदिया, मैना सहित राजपुत्रियोंसे वार्ता करताथा, हास्य विनोदसे हृदय भरताथा, किंचित् समय जानेपर, समोदमार्ग बिताने पर, अपने नगरके समीप पहुंचगया, आनंदसे मनभर गया, अब इस ओर ध्यान दीजिये, राजपुत्रके माता पिताकी कथा श्रवण करलीजिये, जबसे राजपुत्रने त्यागा था, इस नगरका अभाग्य जागाथा, वृक्षसब कुम्हलातेथे, पानीनहीं पातेथे, बेलीं सब उलट गईथीं, सूख कर लिपट गईथीं, पुष्पसब झरगयेथे, फलसब मरगयेथे, जलाशय सबसूख गयेथे, उखरसब ऊखगयेथे, पक्षीसब चहचहातेथे, दानापानी नहींपातेथे, घोड़े सब हींसतेथे, हाथीसब चींघतेथे, ऊंटसब लहंकतेथे, बैलसब डहंकतेथे, चौराहे कोईनहीं झाड़ताथा, गलियोंकी ओर देखा नहीं जाताथा, पुरजन परिजन उदासथे, रोतेहुये सब सुदासथे, राजमंदिर सब मैलेथे, बस्त्र सबके कुचैलेथे, माता पिताका यह कामथा, दिन रात रोनेका धामथा,

भोजनकी सुध नहींथी, कार्य करनेकी बुध नहींथी, किसीने कुछ खिला दिया तो खिलादिया, किसीने जल पिलादिया तो पिलादिया, आप दोनों मौन रहते थे, पुत्र बियोगकी पीरको सहतेथे रामनाम जपतेथे, उन्हींके चरणोंका ध्यानधरतेथे, हर्षावतीका यह हालथा, जीना जंजालथा, अपनी बातों को पछतातीथी, यह कवित्त जिह्वापर लातीथी, यथा॥

कवित्त। हान है न तिनकी सौतिनकी कहानी यह, पानी ते प्रथम जे तलाश बांधे पारकी। भनत"कविन्द्र,,हीं अयानी पान जानी बात, जीत हांत सौतके परेगी पारी सारकी॥ अब जो मिले तो हियरामें मेल राखों, सिपरामें जैसे राखत बड़ाई तरवार की। नाहकहौं वकीवकहौं न रही मूक मेरे, हूक तो न होती चूक होती जो मुरारकी॥

सखियां सब समझातीथीं, नेत्रोंसे अश्रु बहाती थीं, अकस्मात् शुभ शकुन जनानेलगे, कुल देवोंको मनाने लगे, अंग सब फड़कनेलगे, चित्त सबके हुलसनेलगे, दिशा सब सुहाने लगीं, पक्षियोंकी शुभबाणी आनेलगीं नृपरानीके चित्तमें यह आताहै कि मानो कोई राजपुत्र का आगमन सुनाता है, इतनेमें दूतोंने आकर सुनाया कि कोई बड़ा नृप आया है, कोस दो एकपर लश्कर उतराया है, इतना सुन राजाका चित्त उदास हुआ, युद्धसे निराश हुआ, ईश्वरको मनानेलगा, मंत्रीको दीन बचन सुनानेलगा, कि मेरा कोई ख्याली नहीं, राज्यका कोई वाली नहीं, किसके हेतु संग्रामकरें, नाहक क्यों भृत्य मरें, तुम जाकर कहदेव कि राज्यको सँभाललेवें

हमको भोजन बस्त्रदेवें, फिर दंपति बिलाप करनेलगे, राजपुत्रका ध्यान धरनेलगे, राजपुत्रका यह हालथा, एक घंटा एक सालथा, सैन्यको उतरनेकी आज्ञाकी, आपने राजमंदिरकी मार्गली, शीघ्रही पुर प्रवेश किया, पुरवासियेंकि चित्तको हुलसादिया, माता पिताके चरणों पर मस्तक रखदिया, हाथ जोड़ विनय करने लगा कि मेरे ऊपर कृपाहो, अपराध सब क्षमा हो, चोबदार ने निवेदनकी कि महाराज! राजपुत्र नमस्कार करतेहैं, चरणोंपर मस्तक धरतेहैं, राजाने शीतल श्वासले, राम का नामले, चोबदारको उत्तरदिया कि मैं अति अभागी हूं पुत्र सुखसे विरागीहूं, तुम ब्यर्थ क्यों हमको बहकाते हो, राजपुत्रका आगमन सुनातेहो, जब चंद्रकांति ने उच्चस्वर से अपनानाम सुनाया, फिरसे चरणोंपर शीश नवाया, तब राजाने बाणीसे पहिचानलिया, अपनेकंठ-से लगालिया, तन मनको वारदिया, मणिगण न्योछा-वर किया, माताने हृदयसे लगालिया, विरहजनितदुःख अश्रु सरितामें बहादिया, डंकेपर चोबहुई, नौबत की धौंसहुई, पुरजन बधाई लेआनेलगे, मंगलीक गीत गानेलगे, नाचरंग होनेलगा, दान पुण्य होनेलगा, जब राजपुत्रके मंत्रीने राजपुत्रियों का आगमन सुनाया, आद्योपान्त सविध हाल समझाया, तब राजाने राज-पुत्रकी माताको आज्ञादी कि तुम स्वतःजाकर पुत्रबधु-ओंको लेआव, इस उजड़ेघरको फिरसे सजाव, राजपत्नी ने गणेश मनाये, रंगबिरंग डोले सजवाये, सघारी ते-राय होनेलगीं, दासीं श्रृंगार करनेलगीं, आनंदका यह

उमंगथा, जामा सब का तंगथा, फूले नहीं समाते थे, कुरतेके बंद टूट२ जातेथे डंकेपर डंकाथा, परस्पर मिलनेका हंकाथा, दासियों ने राजपुत्रियों को खबरें सुनाईं, कि राजपुत्रकी माता आपके लेने को आईं, तब दोनों हर्षसागरमें समाईं, सहजही लेनेको उठकर धाईं, राजपत्नीको सादर डोलेसे उतारीं, चरणोंकी रज अपने माथे पर धारीं, रानीने बहुओंको हृदयसे लगाया, अपना संपूर्ण दुःख बिसराया, वस्त्राभूषण न्योछावर किये, ब्राह्मणोंको दान दिये, फिर राज मंदिरको लिवा चलीं, बिपत्तिको बिताचलीं, गणेशको मना चलीं, उत्तम गान गाचलीं, वृक्ष सब हरित होगये, मार्ग सब स्वच्छ होगये शुक, पिक शुभ बोलनेलगे, सुन्दरबाणीको खोलने लगे, जलाशय सब पूर्णहुये, दुःखसब चूर्णहुये, नगरी सब सजाईगई, दुकानें फिर लगाईगईं, पुरबासियों को हुलासथा, राजमार्गपर जिनका बासथा, उन्हों ने राजबधुओंके आतेजाना, गृह २ सबने बितान ताना, बंदनवार बांधदिये, कदलीखंभ लगादिये, गली सब सुगंधित जल से सींचदीं, सुन्दर चौकोंसे पूरदीं, स्त्रियोंने मंगलीक कलश माथे पर रखलिआ, आरतीका साजसब सजलिया, मंदगति सवारी आती थी, गृह२आरती उतारी जातीथी, रुपये पैसे लुटाये जाते थे, दीनदरिद्री धाये आते थे, द्रव्यको पाते थे, आशीर्बाद पातेथे, भृत्यों को चावथा, राजमंदिर का बनाव था, तोरणतान दिये थे, केतु पताका लगा दिये थे, सुहागलें कलश लिये हुये द्वार पर खड़ीं थीं, मधुर गान करती हुईं नेग लेनेको

अड़ी थीं, माता ने पुत्रबहुवों की आरती उतारी, अर्घ दे राजमंदिर में सिधारी, नेगियोंको मनोमत नेगदिये, रुपया मुहरें निछावर किये, बंदी सब मोक्ष करादिये, दान को कोश खोल दिये, राजासे जो कोई जो मांगताथा, गज रथ तुरंग सब पाताथा, दम्पति ने पुत्र बियोग की जैसी विपत्ति उठाईथी, अपनी अदशा बनाई थी, वैसा-ही भगवत् कृपासे अवर्णनीय सुख प्राप्त हुआ, दुःख सब निबारण हुआ, आनंदसे दिवस जाने लगे, भृत्य सब इनामें पानेलगे, राजपुत्रके साथमें जो लश्कर था, उनको इतनी इनाम मिली कि चलनेसे अचल होगये, महाराजके सुबचनोंसे तृप्त होगये, नित्य नवीन पदार्थ भोजन करतेथे, बन बाटिकों में बिहरतेथे, जब रतिप्रभा और बुद्धिवती ने महारानीसे हर्षावतीके मिलनेको आ-ज्ञामांगी, तब महारानी ने कहा "परम उत्तम" है! परंतु उसको लज्जित नहीं करना, अपने मनोहरबचनों से उसका हृदय भरना, फिर राजपुत्र सहित दोनों राज-पुत्रीं हर्षावतीके मंदिर में गईं, मैनाको अपनेसाथ लेगईं, हर्षावती शर्मातीथी, सन्मुख नहींआतीथी, तब राजपुत्र ने समोद बुलाया, अपने कण्ठसे लगाया, बिरहजनित शोक मिटाया, फिर दोनों राजपुत्रियोंसे मिलाया, दोनों राजपुत्री मिलनेलगीं, सयुक्त बचन कहनेलगीं, आपने सरसभोगकिया, हमको अपना उच्छिष्टदिया, आपकुलमें श्रेष्ठहो, सपत्नीकत्वमें श्रेष्ठहो, हमतो आपकी दासी हैं, आप-की सेवाकी अभिलाषी हैं, आप क्यों सकुचतीहो, हमसे कुछनहीं कहतीहो, हमारा अपराध क्षमाकरो, इसविनय

को चित्तमेंधरो, हम आपका कभी रसभंग न करेंगे, आपके विनोदसे अपना चित्तभरेंगे, आपसे जो शेष बचेगा, उसीमें हमारा दिल रचेगा, उसीसमय मैनाने भी कहा कि हर्षावती इसओर ध्यान दीजिये, अपने वचनों का स्मरण कीजिये, अब तो हम तुममें जीताहो, उसीका मन चीताहो, हर्षावतीकी अपने सगर्ब वचनोंसे छाती फटी जातीथी, इन वचनोंके श्रवण करनेसे औरभी गड़ी जातीथी, हाथजोड़ अर्ज करनेलगी, राजपुत्रियोंके चरणोंपर माथा धरनेलगी, सलज्जा मनानेलगी, अपनी विनय सुनानेलगी, कि कदाचित् मैं ऐसे वचन सुनाती नहीं, तोआप इहां आतीनहीं, अब आपने हमपर कृपा कीहै, अपने चरणोंको दिखाईदी है, तो मेरा अहोभाग्य है ! आपको दूना सुहाग है ! अब आप समोद विहार कीजिये, राजपुत्रको सुख दीजिये, आपके भोजनोंसे जो …चेगा, वहीहमको तृप्त करेगा, अबहम आपके उच्छि- … भागी हैं, उसीके सुहागी हैं, इसप्रकार विनोदकी … हुई, प्रेमरसकी घातेंहुईं, फिर सब मिलगईं, कमल …सी खिलगईं, राजपुत्रने सबका समाधान … पृथक्२ समय बांधदिया, अब सुखसे विहार करने… आनन्दसे दिन बितानेलगे, एक दिवस मंत्री पुत्रका स्मरण आया, सम्पूर्ण राजसभाको बुलाया, पुरवासियों को एकत्र किया, सविध उसका हाल सुनादिया, इस कथाको श्रवणकरतेही सब रोनेलगे, उसको धिक्कार देने लगे, फिर सबका मतहुआ, मंत्रीके पुत्रका बध हुआ, महाराजने शुभमुहूर्त दिखाया, चन्द्रकांतिको राजसिंहा-

सनपर बिठाया, देशोंमें राजपुत्रके नामका ढंढोरा हुआ, सब शत्रुओं का चित्तमुआ, उत्तम प्रकारसे राज करने लगे, न्यायसे सबकाचित्त भरनेलगे, मातापिता राम नाम जपने लगे, अपना पूर्व सुधारने लगे, नारायणकी कृपा हुई, कथा यह पूर्ण हुई, जिसप्रकार इनकी विपतें निवारणहो, दिन फिरे श्रीभगवत्कृपासे इसीरीति सबके दिन फिरें॥

कवित्त। विपताबिहानी नृपरानीकी कहानी यह, पढ़त अनंदकरे सुखको सरसावेगी। मोदसे विनोदहोत सुजन समाज बीच, श्रवण करेते चित्तचावको हर्षावेगी॥ भगवत कृपासे सब-बाधा निवारणभई, भनत "भवदेव" अब बिघ्ननआवेगी। राजधर्मको सिखावेगी वीररसको बतावेगी, यह चित्तको हुलसावेगी प्रेमरसको सरसावेगी॥

दोहा संवत नभशर खंड शशि, जेठ कृष्ण गुरु वार।
दशमीको प्रभु कृपाते, पूरण भयो विचार॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी॥
नवम्बर सन् १८९३ ई०॥

इति॥